Sixteenth Loksabha

an>

Title: Combined discussion on Statutory Resolution regarding disapproval of National Sports University Ordinance, 2018 and National Sports University Bill, 2018 (Statutory Resolution negatived and Bill passed).

HON. CHAIRPERSON: Now, the House shall take up further consideration of the National Sports University Bill, 2018.

Shri Anurag Thakur.

श्री अनुराग सिंह ठाकुर (हमीरपुर): सभापति महोदय, नेशनल स्पोर्ट्स यूनीवर्सिटी बिल पर चर्चा करते हुए मैंने पिछली बार अपने कुछ सुझाव दिए थे । माननीय खेल मंत्री जी को मैंने बधाई भी दी थी कि 524 करोड़ रुपये की नेशनल स्पोर्ट्स यूनीवर्सिटी देश के मणिपुर राज्य में बनाई जा रही है। यह एक बहुत बड़ा स्वागत योग्य कदम है। नार्थ-ईस्ट के राज्यों में इतनी बड़ी यूनीवर्सिटी के आने से वहां खेलों का जो टैलेंट है, उसे आगे बढ़ने का मौका मिलेगा और नेशनल इंटेग्रेशन की बात करते हैं, उसमें भी यह बहुत बड़ा कदम साबित होगा । इसके लिए मैं मंत्री जी और माननीय प्रधान मंत्री जी को बधाई देता हूं । यह देश का सौभाग्य है कि पूर्व में ओलम्पियन रहे और वर्तमान में खेल मंत्री युवा भी हैं, फौजी भी हैं। मेरा आपसे एक निवेदन रहेगा कि हर साल हमारे सैनिक पूर्व सैनिक बन जाते हैं। उनमें से सैकड़ों खेलों में भाग भी लेते हैं। क्या हम उनका सदुपयोग खेलों के क्षेत्र में देश के विभिन्न राज्यों में कर सकते हैं? बहुत सारे खिलाड़ी स्पोर्ट्स कोटा से पीएसयूज से लेकर सरकारी नौकरी और प्राइवेट क्षेत्रों में आते हैं। क्या हम उनके लिए ट्रेनिंग का कोई करिकुलम बना सकते हैं? क्या मणिपुर की नेशनल स्पोर्ट्स यूनीवर्सिटी में पूर्व सैनिक को आज के हमारे जो वर्तमान सैनिक हैं या सरकारी कर्मचारी हैं या प्राइवेट कर्मचारी पीएसयूज में हैं, जो खेल कोटे से आए हैं, उन्हें प्रशिक्षण देने के लिए इनका लाभ हम कोचेज के रूप में कर सकें, इससे हमारे पास कोचेज की संख्या बढ़ सकती है।

ट्रेनिंग करिकुलम बनाएंगे, सॉफ्टवेयर का उपयोग करेंगे, तो पता चलेगा कि कौन किस क्षेत्र में कितनी ट्रेनिंग प्रतिदिन दे पा रहा है। हफ्ते में उसका एक खाका आपके पास आना शुरू होगा । मैं तो यही कहूँगा कि :-

न हारना जरूरी है, न जीतना जरूरी है,

खेल है राष्ट्र निर्माण-व्यक्तिव निर्माण का जरिया,

खेल को बस खेलना जरूरी है ।

हमारे स्कूलों और विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी खेलें, उसके लिए यह प्रयास जरूर होना चाहिए । मैंने कहा था कि the National Sports University should be tied up with all schools and universities, both, through a bicycle rim model. The National Sports University should be treated as an axle at the centre of sports culture. All the schools and universities shall be connected to the university by rims. Now, I wish to strengthen the schools' sports culture and I propose a comprehensive school physical activity policy.

वहाँ पर जो फिजिकल एजुकेशन टीचर्स होते हैं, जिनको पीटी टीचर भी कहा जाता है, यदि उनका किसी एक खेल में इंट्रेस्ट है, तो वे केवल उसी खेल को बढ़ावा देंगे । मुझे लगता है कि इसका निर्णय खेल मंत्रालय को अलग-अलग स्कूलों और एचआरडी मंत्रालय के साथ बातचीत करके करना चाहिए । इसके लिए पैसे का भी प्रावधान करना चाहिए । अगर हम यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका की बात करें, तो वहाँ खेल के लिए हजारों करोड़ रुपये दिये जाते हैं। 40 यूनिवर्सिटीज को एक साल में लगभग तीन सौ करोड़ रुपये से अधिक राशि दी जाती है। लगभग सात-सात करोड़ रुपये एक-एक फेडरेशन को मिलते हैं। लेकिन हमारे देश में कितनी राशि मिलती है? नेशनल स्पोर्ट्स फेडरेशंस की इसमें क्या भूमिका होगी, इसका प्रावधान इस बिल में कहीं नजर नहीं आता है।

मेरा मानना है कि खेल मंत्रालय के अलावा, नेशनल स्पोर्ट्स फेडरेशन की एक बहुत बड़ी भूमिका है। वह टीम्स पिक करती है, अपने स्टेट्स की संस्थाओं के माध्यम से कोचेज टूर्नामेंट्स करवाते हैं, तो क्यों नहीं उनकी भी एक भूमिका इसमें रखी जाए? मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ कि स्पोर्ट्स फेडरेशंस के एक्टिव मेम्बर्स को इस यूनिवर्सिटी में एकेडमिक और एक्टिविटी काउंसिल के मेम्बर बनाए जाएं । इसमें एक व्यक्ति आईओए का लिया जाए, एक नेशनल स्पोर्ट्स फेडरेशन से लिया जाए ताकि हमारा तालमेल इनसे बेहतर हो सके ।

आप फॉरेन इंस्टीट्यूशंस की मदद ले रहे हैं, जो जरूरी है। लेकिन यह भी उतना ही जरूरी है कि हम अपने स्पोर्ट्स फेडरेशन को इसके साथ जोड़ें ताकि नेशनल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी का ज्यादा-से-ज्यादा लाभ उठाया जा सके ।

आज हमारे देश में क्या परिस्थितियाँ हैं? तीन में से दो बच्चे खेलों में एक्टिव नहीं हैं। चार में से एक बच्चा ओवरवेट है और पाँच में से दो बच्चे कुपोषण के शिकार हैं। केवल एक प्रतिशत बच्चे ही स्पोर्ट्स के हिसाब से फिट हैं। सौभाग्य से हमारे खेल मंत्री और स्वास्थ्य मंत्री दोनों ही यहाँ पर मौजूद हैं। मोटापा भी एक चिन्ता का विषय है और खेल ही इसे दूर कर सकता है।

ड्रग्स एक बहुत बड़ी चिन्ता का विषय है । 50 प्रतिशत नौजवान बहुत-से राज्यों में ड्रग्स के कारण पीड़ित हैं। 50 प्रतिशत बच्चे कुपोषण के शिकार हैं। इसमें एक बड़ी जिम्मेदारी स्पोर्ट्स निभा सकती है।

सभापति जी, मेरा आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से निवेदन है कि हम खेलों को नीचे तक ले जाएं । लोगों की मानसिकता को बदलने का प्रयास करें। आपने सही दिशा में कदम उठाए हैं और आपके इन कदमों का मैं स्वागत भी करता हूँ। मैं केन्द्र सरकार द्वारा उठाये गये कदम का भी स्वागत करता हूँ। लेकिन राज्य की सरकारें कैसे आगे बढ़ पाएंगी? हम एनजीओज को, स्पोर्ट्स फेडरेशन को अपने पक्ष में कैसे खड़ा कर पाएंगे, यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात है।

आज भारत को इस बात को समझने की आवश्यकता है। हम केवल खेलों की बात नहीं कर रहे हैं। हम जीतने की बात कर रहे हैं। प्रसून दा यहां बैठे हैं। वे फुटबॉल के बहुत बड़े खिलाड़ी हैं। ये हज़ारों-लाखों लोगों के चहेते हैं। आप खेलों में किस तरह अपना योगदान दे सकते हैं? बृजभूषण शरण जी रेसलिंग फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। इस सदन और राज्य सभा के बहुत सारे मैंबर्स फेडरेशनों से जुड़े हुए हैं। वे उनमें अपना योगदान देते हैं। अरुण जेटली जी ने दिल्ली में स्टेडियम बनवाया और शरद पवार जी ने मुंबई में बनवाया । मुझे भी इसका अवसर मिला और मैंने भी हिमाचल प्रदेश में छह-सात स्टेडियम्स बनवाए, जिनमें से धर्मशाला का स्टेडियम दुनिया के सब से खूबसूरत स्टेडियम्स में गिना जाता है।

इसके अलावा हमें इस ओर ध्यान देने की ज़रूरत है कि हम ज़मीनी स्तर पर बड़े टूर्नामेंट्स कैसे कराएं? मैंने पिछले साल भी वहां रूरल ओलंपिक्स करवाया । इस साल हम वहां खेल महाकुंभ करवा रहे हैं। मेरे संसदीय क्षेत्र से एक लाख नौजवान उसमें पार्टिसिपेट कर रहे हैं। बीस हजार से ज़्यादा नौजवानों ने अब तक पार्टिसिपेशन कर दिया है। हमने उन नौजवानों में से टैलेंट पिक किया है। इस साल और पिछले साल के मेरे इन प्रयासों को देखकर बहुत से और सांसदों ने भी इसे शुरू किया है। मैं माननीय मंत्री जी ने अनुरोध करना चाहता हूं कि आप सांसदों के लिए एक फंड क्रिएट करें, ताकि ज़मीनी

स्तर पर हर साल हम अपने क्षेत्रों में एक ऐसा टूर्नामेंट करवा सकें, जिसके लिए सांसदों को आपके मंत्रालय के माध्यम से सहायता मिल सके । मुझे लगता है कि मनोज तिवारी जी, नंदू भैया, धनंजय जी और बाकी सब सदस्य भी इससे सहमत होंगे । जय प्रकाश जी क्या ऐसा करना चाहिए या नहीं करना चाहिए? कलिकेश जी, माननीय मंत्री जी को सांसदों को यह फंड देना चाहिए?

श्री कलिकेश एन. सिंह देव (बोलंगीर) : बिलकुल देना चाहिए ।

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : इससे हम ज़मीनी स्तर पर एक्टिविटी करवा कर दे सकते हैं, ताकि हमारे खिलाड़ी आगे आ सकें । हम जैंडर न्यूट्रल की बात तो सदा करते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि खेलों में अगर हिंदुस्तान का नाम किसी ने ऊंचा किया है, तो हिंदुस्तान की बेटियों ने ओलंपिक्स में मैडल्स जीतकर किया है। मैं इस सदन की ओर से उनको बहुत बधाई देता हूं।

आप देखिए कि वर्ष 1972 में मात्र 32 हजार महिलाएं इंटर कॉलेज एथलेटिक चैंपियनशिप्स में भाग लेती थीं । आज वे बढ़कर एक लाख दस हजार से ज़्यादा हो गई हैं। स्कूलों में मात्र तीन लाख बच्चे पार्टिसिपेट करते थे, आज 21 लाख से ज़्यादा बच्चे पार्टिसिपेट कर रहे हैं। इसमें उनकी भागीदारी बढ़ी है। चाहे वे बेटियां हों या महिलाएं हों, हमने इस ओर कदम आगे बढ़ाए हैं। हमारी सरकार ने 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' के साथ ही बेटियों को खेलने के अवसर भी दिए हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम इस दिशा में आगे भी कदम उठाएंगे । लेकिन आज दुनिया में क्या हो रहा है? अमेरिका जैसा राष्ट्र, मैं बार-बार अमेरिका की बात क्यों करता हूं? क्योंकि भारत की 130 करोड़ की आबादी में हमारे पास वे अवसर हैं, जो हमें देखने हैं। अमेरिका की मार्केट कितनी बड़ी है? दुनिया की मार्केट कितनी बड़ी है? 40 लाख करोड़ रुपये के खेल और खेलों से जुड़ी हुई यह दुनिया की मार्केट है। आखिर उस मार्केट में हिंदुस्तान का हिस्सा कितना है? यह चिंता का विषय है। आज आई.पी.एल. जैसे खेल को 35 हजार करोड़ रुपये का आंका गया है। इसके बाद बाकी लीग्स शुरू हुईं । आई.पी.एल. के माध्यम से पूर्व खिलाड़ियों को मौका मिला, करंट खिलाड़ियों को मौका मिला और उभरते हुए खिलाड़ियों को भी अवसर मिला । माननीय सभापति जी, ऐसा ही बाकी लीग्स के माध्यम से भी मिल पाया है। इससे खेल इंडस्ट्री को आगे बढ़ने का अवसर मिलेगा, रोजगार मिलेगा । स्पोर्ट्स मैनेजमेंट होगी तो उस क्षेत्र में भी रोजगार के अवसर पैदा होंगे । इससे इकोनॉमी में भी ज़्यादा योगदान होगा । विदेशों में तो जब एक बड़ा स्टेडियम बनता है, तो पूरा शहर उसके आसपास खड़ा हो जाता है।

सभापति जी, मैं धर्मशाला का उदाहरण देता हूं। धर्मशाला में जितना टूरिज़्म आज से दस साल पहले था, आज उससे तीन गुना ज़्यादा है। वहां चार-चार फ्लाइट्स आनी शुरू हो गईं, पांच-पांच फाइव स्टर होटल्स बनने शुरू हो गए । सैकड़ों नए होटल्स बन गए, जिसके कारण वहां की अर्थव्यवस्था खड़ी हो पाई । यह हम वहां बने क्रिकेट स्टेडियम के कारण कर पाए हैं। इस देश में ऐसे बहुत सारे टूर्नामेंट्स और लीग्स को शुरू करने की आवश्यकता है। रशिया में फीफा का टूर्नामेंट हुआ। रशिया के बारे में न जाने दुनिया क्या कहती है, मुझे भी वहां जाने का अवसर मिला । मैं यहां यह कह सकता हूं कि इससे वहां टूरिज़्म कई गुना ज़्यादा बढ़ेगा ।

सभापति जी, हमारे पास भी कॉमनवेल्थ खेलों के समय ऐसा मौका आया था, लेकिन उस समय हिंदुस्तान यह नहीं कर पाया, क्योंकि उस समय की सरकार पर पैसा खाने की बू और भ्रष्टाचार के आरोप लगे थे ।

हम खेलों को भी नहीं छोड़ पाये । उस समय की सरकार के मंत्री हों, उस समय की खेल संस्थाओं के सदस्य हों, उस अवसर से हिन्दुस्तान का नाम दुनिया भर में रोशन हो जाता, वे उसे उस दिशा में आगे बढ़ाने के बजाय पैसा खाने में लग गये । अमेरिका का मैं उदाहरण देना चाहता हूँ। उसने वर्ष 2028 के लिए बिड की है। वह कुछ नया नहीं करने जा रहा है। उनकी एल.ए. की यूनिवर्सिटी में लोग ठहरेंगे, साउथ कैलिफोर्निया की यूनिवर्सिटी में मीडिया सेण्टर बनेगा । वह हजारों करोड़ रुपये आधारभूत ढांचा खड़ा करने के लिए नहीं दे रहे हैं, जैसे हमारे यहाँ पर जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम हो, करणी सिंह स्टेडियम हो, तालकटोरा स्टेडियम हो या इन्दिरा गांधी इनडोर स्टेडियम हो । क्या हो पाया कॉमनवेल्थ खेलों के बाद? मैं माननीय मंत्री जी से अनुरोध करना चाहता हूँ कि आप इन स्टेडियमों का ज्यादा से ज्यादा उपयोग करने के लिए टेण्डर करके दीजिए । चाहे इसमें किसी तरह की एक्टिविटीज हों, चाहे कोई कॉर्पोरेट करे, चाहे कोई सरकार करे, कुछ भी हो उसका सदुपयोग होना चाहिए, ताकि उसका रख-रखाव ठीक हो सके । सरकार को अपना पैसा खिलाड़ियों के प्रशिक्षण पर लगाना चाहिए, जिससे हमारे खिलाड़ी ज्यादा से ज्यादा मैडल जीतकर आ सकें । हमें जिला, प्रदेश और ब्लॉक स्तर पर अलग-अलग तरह की फैसिलिटीज चाहिए और मुझे पूर्ण विश्वास है आप यह काम करेंगे । आपकी नेशनल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी अपने साथ कितने सेण्टर ऑफ एक्सीलेंस जोड़ेगी? हरियाणा ने बहुत सारे मैडल्स देश के लिए जीतकर दिये हैं। हरियाणा जुड़ेगा, पंजाब में वह क्षमता है, पंजाब भी जुड़ेगा । ओडिशा में हॉकी अच्छी खेली जाती है तथा झारखण्ड में हॉकी खेली जाती है। क्या आप इन दो राज्यों को हॉकी के साथ जोड़ेंगे और सेण्टर ऑफ एक्सीलेंस वहाँ पर बनायेंगे? क्रिकेट में धोनी झारखण्ड से आते हैं, लेकिन क्रिकेट के क्षेत्र

में मैं कहना चाहता हूँ कि वहाँ बी.सी.सी.आई. अपना बहुत अच्छा काम करती है। लेकिन जो पिछले दो वर्षों में घटा है, मैं उस बात को यहाँ पर नहीं कहूंगा । हम कहां थे और कहां आ गये और उसका जिम्मेदार किसको ठहराना चाहिए, मैं उसकी चर्चा यहां पर नहीं करुंगा । मुझे बाकी खेलों की चिन्ता भी है। माननीय मंत्री जी, आप खुद खिलाड़ी रहे हैं। शूटिंग वाले हमारे खिलाड़ी विदेशों में न जायें, क्या आप मेरे हिमाचल प्रदेश में एक अन्तर्राष्ट्रीय शूटिंग रेंज और वहाँ पर प्रशिक्षण का स्थान बनायेंगे? अगर केन्या के और कैरीबियन आइलैण्ड के खिलाड़ी एथलेटिक्स में, ट्रैकन फील्ड में अच्छा करते हैं तो क्या हाई एल्टीट्यूड ट्रेनिंग सेण्टर आप हिमाचल प्रदेश में बनाने जायेंगे? हम सांसद रहते हुए आपका कैसे सहयोग कर सकते हैं, खेल संघों से जुड़े हुए कि कुछ सरकार करे, कुछ हम करें और मिलकर भारत के खिलाड़ियों को गोल्ड मैडल जीतने के लायक बना सकें । वर्ष 2020, वर्ष 2024 और वर्ष 2028 का आपने अपना क्या टारगेट रखा है कि कैसे राठौर, बिन्द्रा और साक्षी जैसे और खिलाड़ी देश के लिए मैडल जीतकर ला सकें? अगर अमेरिका 350 करोड़ रुपये चालीस नेशनल स्पोर्ट्स फेडरशन को प्रतिवर्ष देता है, तो आप कितना दे पा रहे हैं? उन्होंने पे फॉर परफॉर्मेंस मॉडल निकाला है, लेकिन आपको कन्विंस करना पड़ता है कि आप क्या करेंगे, मैडल जीतेंगे, तब आपको इतना पैसा मिलेगा । क्या आप अपनी नेशनल स्पोर्ट्स फेडरेशन से पे फॉर परफॉर्मेंस मॉडल के आधार पर कहेंगे कि वह दें और आप उनको इस तरह से बजट का प्रावधान करके दें? अगर नॉर्थ अमेरिका की स्पोर्ट्स मार्केट वर्ष 2014 में 40 हजार करोड़ रुपये की थी, तो वर्ष 2019 में बढ़कर वह 51 हजार करोड़ रुपये की हो गयी है। अगर 40 लाख करोड़ रुपये की दुनिया भर की ग्लोबल मार्केट है तो आप हिन्दुस्तान की मार्केट का शेयर ग्लोबल मार्केट में कितना देखना चाहते हैं? आप स्पोर्ट्स मैन्युफैक्चरिंग के लिए बढ़ावा कैसे देंगे? इसलिए मैं आपके माध्यम से कहता हूँ कि, जब आप बाकी मंत्रालयों से टाई आप करेंगे तो हमारे यहाँ पर रोजगार के अवसर उत्पन्न होंगे। यह आपका विषय नहीं है, लेकिन अगर आप प्रयास करेंगे तो जैसे स्किल इण्डिया मंत्रालय है, जब तक वह बाकी मंत्रालयों से बात नहीं करेगा, तब तक यहां पर रोजगार या इण्डस्ट्री क्या चाहती है और हम क्या शिक्षा दे रहे हैं, इसमें बहुत बड़ा अन्तर है। दुनिया भर में हमें किस स्तर पर पहुंचना है और हमारे खिलाड़ी किस स्तर पर हैं, हमें इसमें सुधार कैसे करना है?

सभापति जी, मैं यह मंत्री जी से जानना चाहूँगा कि इसके लिए उन्होंनें क्या सोचा है? यहाँ पर तालकटोरा स्टेडियम में स्वीमिंग पूल तो बना, लेकिन आर.एन.डी. की फैसिलिटी नहीं है।

कहीं ऐसा कैमरा, ऐसी तकनीक या ऐसा सॉफ्टवेयर नहीं है, जिससे यह पता लगाया जा सके कि किसी स्विमर का हाथ कैसे चले, ताकि उसकी स्पीड बढ़ पाए? हमारी शूटिंग रेंज में मेडिटेशन के लिए क्या करना चाहिए? आप इस दिशा में क्या कर रहे हैं? वेटलिफ्टिंग और अन्य स्पोर्ट्स में रिसर्च एंड डेवलपमेंट पर हमारी सरकार ने क्या काम किया है और आगे क्या करने वाले हैं? इसका लेखा-जोखा आप सदन में बताएंगे तो सभी को इससे लाभ होगा ।

महोदय, सेन्ट्रल यूनिवर्सिटीज़ देश भर में हैं। मैं माननीय मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि क्या सेन्ट्रल यूनिवर्सिटीज़ को जोड़ने का कार्यक्रम इसके माध्यम से किया जाएगा? क्या देश की प्राइवेट और सरकारी यूनिवर्सिटीज़ को कहा जाएगा कि वे अपने यहां किन्हीं एक-दो खेलों के लिए सेन्टर ऑफ एक्सीलेंस बनाएं ताकि हमारी यूनिवर्सिटीज़ आने वाले समय में बड़े-बड़े मेडल जीतने वाले खिलाड़ी पैदा कर सकें। डी॰वाई॰ पाटिल जी ने बहुत बड़ा स्टेडियम बनाया था । आज से 20-30 साल पहले तक यूनिवर्सिटीज़ से हमें क्रिकेट और अन्य खेलों के खिलाड़ी मिला करते थे, लेकिन आज यूनिवर्सिटीज़ खेलों में ठप्प हो गयी हैं। खेलों का वहां नाम भी नहीं लिया जाता है। जामिया-मिलिया या बाकी यूनिवर्सिटीज़ की बात की जाए तो क्या हम उनके लिए एक सेन्टर बनाएंगे ताकि वहां से बड़े-बड़े खिलाड़ी निकल सकें । हमारे यहां 1200 के लगभग सेन्ट्रल स्कूल्स हैं, नवोदय विद्यालय हैं । क्या आप एचआरडी मिनिस्टर से बात करके इन स्कूलों के माध्यम से खेलों की नर्सरी तैयार करेंगे? एचआरडी मंत्रालय भी पैसा देता है, लेकिन उसका सदुपयोग कैसे होगा? अगर आपमें और उनमें तालमेल होगा तो हम सदुपयोग करके वहां से बड़े खिलाड़ी निकाल पाएंगे। यूनिवर्सिटीज़ से आप तालमेल कीजिए । पूरे देश में सेंट्रल यूनिवर्सिटीज़ हैं। आदरणीय नड्डा जी, हमारे डॉक्टर्स मानसिक और शारीरिक तौर पर फिट रहें तभी देश स्वस्थ रह पाएगा । आप स्वयं हिमाचल प्रदेश ओलम्पिक संघ के पूर्व अध्यक्ष रहे हैं। आप आर्चरी संघ के अध्यक्ष रहे हैं। आप इस बात से सहमत होंगे कि मेडिकल कॉलेजिस में भी स्पोर्ट्स और फिटनेस को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। उनके परिवार के लोगों को इसका लाभ मिलना चाहिए । हम अपने शिक्षण संस्थानों का अगर इस्तेमाल करेंगे तो हम उसका फायदा उठा पाएंगे । आपने लुक ईस्ट पॉलिसी की बजाय एक्ट ईस्ट पॉलिसी पर काम किया है। नॉर्थ-ईस्ट में आपने बहुत बड़ा सेंटर खोला है, इसके लिए मैं आपको बधाई देता हूं। इंटर कॉलेज चेम्पियनशिप के लिए खेल मंत्रालय एचआरडी मंत्रालय को कहे । आप टेलेंट को बढ़ावा देने के लिए इंटर स्कूल और इंटर कॉलेज चेम्पियनशिप की शुरूआत करवाइए । हमारे देश में बहुत बड़े-बड़े ब्रांड्स हैं जो फण्डिंग कर सकते हैं। आप सांसदों की एक टीम का गठन कीजिए । हम आपको सहयोग करेंगे कि स्कूल से लेकर कॉलेज

तक किस तरह से खेलों को आगे बढ़ाया जा सकता है। हम इकट्ठे मिलकर उस पर काम कर सकते हैं। आपका पांच और बीस वर्ष का क्या प्लान है, अगर आप देश के सामने वह रखेंगे तो उससे सभी को लाभ होगा । मैं अपनी बात समाप्त करते हुए कहना चाहूंगा कि डीएवी स्कूल्स या डीपीएस स्कूल्स हैं, इनमें से किसी के एक हजार स्कूल्स हैं तो किसी के दो सौ स्कूल्स हैं। केन्द्रीय विद्यालय के 1200 स्कूल्स हैं। यहां खेल के मैदान बने हुए हैं। आप इनको योगदान दीजिए ताकि हम देश में खेलों का बहुत सेंटर खड़ा कर पाएं । कोचेस की कमी का मैंने उल्लेख किया, आप पूर्व खिलाड़ियों को नेशनल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी के माध्यम से ट्रेनिंग देंगे और उनको हर दो साल बाद रीफ्रेशर कोर्स करवाएं । दुनिया में बहुत सारे क्लब्स हैं । एनबीए, यूरोपियन प्रीमियम लीग और अन्य फेडरेशन्स और क्लब्स हैं। हम इनके माध्यम से ट्रेन द ट्रेनर्स प्रोग्राम आयोजित कर सकते हैं। जिससे हमारे ट्रेनर्स को और अच्छा प्रशिक्षण मिल पाएगा और हमारी विदेशी कोचेस पर निर्भरता भी खत्म हो पाएगी ।

एक निवेदन मुझे आपसे और करना है। हमारे यहां पर जंगल हैं, पहाड़ हैं, नदियां हैं। माउन्टनीरिंग से लेकर एडवेन्चर, पैरा ग्लाइडिंग से लेकर स्कीइंग तक सारी अपार संभावनाएं हैं, लेकिन पैसा नहीं है। कैसे हम बना पाएंगे? राज्य की सरकारें न तो फंड देती हैं और न ही केन्द्र की सरकार से उतना फंड मिल पाता है। क्या सरकारें पैरा ग्लाइडिंग, स्कीइंग इन सबको लेकर गंभीर हैं? विदेशों में जब हम जाते हैं तो देखते हैं कि लोग नर्सरी से लेकर पहली क्लास तक के बच्चों को जंगल घुमाने के लिए लेकर जाते हैं ताकि उनको उसकी आदत पड़ जाए । टूरिज्म बहुत बड़ा मददगार साबित हो सकता है।

वाटर स्पोर्ट्स से लेकर पैरा ग्लाइडिंग तक यह एक नई फील्ड है। टूरिज्म और खेलों के जरिए शारीरिक तौर पर फिट रहने का एक बहुत बड़ा प्रावधान किया जा सकता है। क्या आप ट्रेनिंग हब माउंटीनिरिंग से लेकर अन्य खेलों तक के लिए इस दिशा में कोई कदम उठाएंगे?

अंत में, मैं अपनी बात इस बारे में कहकर खत्म करना चाहूंगा कि सरकारों को, शिक्षण संस्थानों को, परिवारों और समाज को अपनी सोच में बदलाव लाना होगा । 12-14 वर्ष के बच्चों को केवल यह नहीं कहना चाहिए कि पढ़ाई की ओर ध्यान दो । उन्हें खेलों की ओर भी उतना ही ध्यान देना होगा । हम तभी इस देश के खिलाड़ियों को आगे बढ़ने का अवसर दे पाएंगे । आइए इकट्ठे मिलकर भारत को उस दिशा की ओर ले जाएं कि -

आसमां की बुलंदी से होगा नाता उनका,

माटी की धमक से चमकेगा ललाट उनका ।

वक्त है बढ़ाने का खिलाड़ियों के मान को,

जो बढ़ाएंगे विदेशों में तिरंगे की शान को ।।

आइए, मिलकर भारत में ऐसे खिलाड़ियों का निर्माण करें । माननीय खेल मंत्री जी और उनका मंत्रालय जो नेशनल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी बिल लेकर आए हैं, उसके लिए मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। हमें केवल एक यूनिवर्सिटी तक नहीं रुकना है। आपने जम्मू-कश्मीर में जो सैकड़ों करोड़ रुपए दिए हैं, उसमें भी करना है। आगे आने वाले समय में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस देश के कोने-कोने में खोलकर सेंट्रल यूनिवर्सिटीज, यूनिवर्सिटीज, केन्द्रीय विद्यालय और बाकी अन्य स्कूलों को जोड़कर हमें एक ऐसी फौज खड़ी करनी है। आप तो पूर्व फौजी हैं और मैं अब का फौजी हूं। आप भी पूर्व खिलाड़ी हैं, मैं भी पूर्व खिलाड़ी हूं। आप खेल मंत्री हैं, मैं खेल प्रशासक हूं। हम सब मिलकर इस देश में खिलाड़ियों का निर्माण करेंगे । हिन्दुस्तान में 2020, 2024, 2028 और हर ओलंपिक में लगातार मेडल जीतते ही जाएंगे ।

HON. CHAIRPERSON : Thank you Anuragji, you have made very good points.

Dr. Thokchom Meinya.

… (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Let him make good points. I will thank him also.

Shri Anurag Thakur, as a former sportsman, has made very good suggestions.

DR. THOKCHOM MEINYA (INNER MANIPUR): Hon. Chairperson, Sir, I thank you for giving me this opportunity to speak.

I stand here to welcome and support the National Sports University Bill, 2018.

.....{Chairman Sir, I would like to seek your kind indulgence and also the indulgence of the House, to tell you a brief history of this National Sports University (NSU); it is very interesting. The proposal to set up the National Sports University in Manipur was initially announced by our Hon. Prime Minister Shri Narendra Modiji. And Rs.100 crore was allocated for it, in the 2014-15 Union Budget. For setting up this University 325.90 acres of land has been made available by the Manipur State Government at Koutruk in Imphal West District of Manipur.

Sir, the National Sports University Bill 2017 which was first introduced on 10th August 2017 in Lok Sabha could not be passed. Then this bill was referred to the Standing Committee and the committee submitted its report on 15th January, 2018. The NSU bill could have been passed in the last Budget Session itself even through the House was in constant pandemonium. Sir, this bill is not a controversial bill, it could have been passed earlier even without discussion as we did for the Union Budget and other important Bills.}*

Sir, normally, we are never in favour of any Ordinance as a matter of fact. Having assumed that the National Sports University Bill, 2017, which I referred to just now, would have been passed in the Budget Session of Parliament itself, two courses have already been started by the Ministry in an otherwise well-equipped Khuman Lampak Sports Complex, which was the venue of the 5th National Games, and these students would have suffered for want of legal and statutory sanction. There was perhaps an absolute necessity for an Ordinance. Hence, I would say that the Union Government took a decision to go in for an Ordinance. But this is not a good precedent.

The National Sports University Ordinance 2018 (N0. 5 of 2018) was promulgated on the 31st of May and thus the National Sports University in Manipur has come into existence with effect from that day, that is 31st of May, 2018, a red-letter day for the country and for the State of Manipur as well.

The National Sports University Bill was taken up day before yesterday for consideration and passing. Better late than never remains the only explanation in our life. I would request all my hon. colleagues in this august House to support the Bill wholeheartedly and let us pass it unanimously.

The National Sports University will be the first of its kind full-fledged Sports University of international standard. The areas of study so proposed comprise of Sports Science, Sports Medicine, Sports Technology, Sports Management and High Performance Sports Training, etc. As of now, there are some institutes in the country which offer various courses for athletes and coaches. However, a void still exists in the sports environment of the country in various fields which I mentioned just now.

The proposed National Sports University in Manipur is expected to bridge this gap and fill this void. I congratulate the Union Government and the Ministry of Youth Affairs and Sports and wish them the best of luck.

With the establishment of this National Sports University, I wish and hope that in ten to twelve years' time, we will be in a position to win more medals in Asian Games, Commonwealth Games and Olympics. It is because with the introduction of new sports technology, management and advanced coaching, there will definitely be a sea change in the overall standard and performance of our players. Further, taking into account the fact that ours is a very big populous country, by providing high quality sports training and adopting quality international sports practices, India can become a sports power house in the near future.

It is a well-known fact that India has the presence of potential indigenous games and sports. I strongly believe that the National Sports University will certainly promote our indigenous games like Kabbadi, Kho Kho, etc and Sagon Kangjei (polo), Thang-ta Martial Arts of Manipur and also games like Kalaripayattu of Kerala. I am privileged to inform this House that because of the huge presence of indigenous games and sports in my State, Manipur, our children – boys and girls – could do so well in games and sports, particularly in

contact sports. We have, over and above our famous Polo and Thang-ta, equally competitive Mukna, Mukna Kangjei, Kang and Yubi Lakpi, etc to mention a few. Manipur has produced a good number of international players including Olympians in the fields of hockey, boxing, weight lifting, cycling, archery, judo and football. You may kindly remember that in the last Under 19 Indian team, Manipur had eight players in the team of eleven.

We felt very much elated when our Olympic medallist Ms. Mary Kom was nominated to the Rajya Sabha by the Government. With all humility, I do propose that this National Sports University be dedicated to those sports persons of the country, including your goodself and the sports persons of the State of Manipur, in particular who brought laurels for the country in the field of games and sports. We are very confident that you and all of you for that matter, would have performed much better had all these improved modern facilities of international standard were made available to you at that point of time.

It is heartening to note that to make this National Sports University a world class university, MoUs have been signed by the Government of India with two Australian Universities, Canberra and Victoria Universities for the development of curriculum, research facilities and laboratories.

Although there are provisions for establishing Outlying Campuses, Regional Centres and Study Centres, my humble request and rather demand to the hon. Sports Minister is that let us first of all develop the Mother Campus at Koutruk in Manipur State.

In the beginning, let us give our first priority to set up the mother campus with the filling up of the statutory posts of the University like Chancellor, Vice-Chancellor, Proctor, Deans etc. Here I would like to point out that though Proctor is very much a member of the Court and also of the Executive Council, it appears that, in the list of the officers of the University in Clause no.8, Proctor is not mentioned there. At the same time, it is also not defined under Clause 2 of the Bill. I think it will be taken up under the Statute.

Sir, Manipur is recognized as the home of Polo – a modern form of our Sagol Kangjei, a game played riding on a horse. Sagol means horse and Kangjei means a cane stick. Our horses are small in size. Britishers called them Pony. The Britishers started playing Polo at Cachar district in Imphal. Encyclopaedia Britannica and Guinness Book have mentioned that modern game of Polo has originated from the State of Manipur. Every year, we do organise regular International Polo Tournaments in Imphal.

I request the Hon'ble Union Minister of Sports to set up an Institute of Polo in Manipur under the National Sports University. This will be a great blessing and a good gesture to all Polo lovers of the world. This will also be an icing on the cake for the people of Manipur.

Once again, Sir, I wholeheartedly support the Bill.

Thank you.

SHRI G. HARI (ARAKKONAM): First of all, I express my sincere gratitude and indebtedness to our beloved leader Hon'lble Puratchi Thalaivi Amma for being instrumental in making me a Member of Parliament. I once again thank each and every person of Arakkonam Parliamentary Constituency for electing me as their Member of Parliament.

Sir, I was born in a village called Kuppamkandigai in Thiruvallur district of Tamil Nau. My parents Smt. G. Chinnammaal and Shri S.K.Govindasamy with their limited resources had provided me facilities for my studies and sports. Had there been a Sports University during that time, I would have been a champion in sports. But there were no basic sports amenities for poor and rural people to get training and perform well in sports and games in those days.

Sir, The National Sports University Bill, 2018 replaces the National Sports University Ordinance, 2018 that was promulgated on 31st May, 2018. The Bill seeks to establish a National Sports University in Manipur. The University will undertake research on physical education, strengthen sports training programmes and collaborate internationally in the field of physical education among others.

Sir, Tamil Nadu is a pioneering State for the promotion of sports and games. To promote sports among the masses and to achieve excellence at national and international levels, Hon'ble Puratchi Thalaivi Amma created a separate Ministry for Sports and Youth Affairs in Tamil Nadu.

The sports Development Authority of Tamil Nadu founded in 1992 focuses on providing good opportunities for talent identification and to develop identified talent to excellence at State, national and international levels.

Under the programme, the 'Catch Them Young' and Under-12 and Under-16 programmes of District Sports Council of Tamil Nadu have brought to light tremendous hidden talents from rural areas to Tamil Nadu. As a result of this, we have produced many medal winners in sports and games of national and international competitions.

Sir, Thiru Sathish Sivalingam, the first Indian male weightlifter who has won Gold medals in two consecutive Commonwealth Games hails from Vellore District which comes under my Arakkonam Constituency. I am really proud of him.

Sir, Puratchi Thalaivi Amma had constructed several sports infrastructures like the Jawaharlal Nehru Outdoor and Indoor Stadium, Lawn Tennis courts in Chennai, stadium and swimming pool at the headquarters of each District in Tamil Nadu.

Establishing sports infrastructure and encouraging the sports and games are very important for promotion of sports to meet the international standards.

The Government should construct sports infrastructure of international standards to promote sportspersons to participate in the coming Olympics, Asian Games and Common Wealth Games.

To win 10 Gold medals, and to get 50 medals in the overall medal tally in 2020 Olympics in Tokyo should be our motto. Sports impart great qualities and play an important role in enabling any person to succeed in all aspects of life. Sports and games are crucial for overall youth development. Team sports like

hockey and football help in teaching the spirit of team work as well as development of leadership qualities. I would like to urge the Government to provide importance for kabaddi, football, hockey, badminton and other games at the same level that is given to cricket in India.

Considering the far-reaching benefits of fitness in human life, the Government has introduced 'Chief Minister's Fitness for All' Program in the State. Young people are full of energy, courage, spirit of adventure, hope and ambition. Therefore, youth are not only the future of a country, but also a great resource for the country. They have a crucial role in constructive and developmental activities of the society. It is important to properly engage the youth of the country in nation-building activities. Their energy needs to be channelized in developmental activities and social works.

The YMCA College of Physical Education in Chennai was founded in the year 1920. The College stands as a hallmark for training Physical Education teachers; coaching the students who can teach Physical Education, skills and techniques of games; organizing sports competition; and undergo research programmes. The institute is accredited by NAAC as an 'A-grade' College. It is recognized by NCTE and the Government of Tamil Nadu.

The YMCA College of Physical Education offers M.A., M.Phil and Ph.D courses in Physical Education. The one-year Bachelor of Mobility Science, and three years B.P.E.S courses and the two-years Diploma in Physical Education attract a large number of students from plus-two levels.

Besides these, M.Sc., Fitness, Exercise Rehabilitation and Nutritional Care; PG Diploma in Sports Coaching including tennis, cricket, swimming, basketball, handball, hockey, football, track & field; and PG Diploma in Yoga are the courses offered at the YMCA College, Chennai.

We are proud to have an outstanding sportsperson as our Sports Minister now. He is young and energetic. I personally request the hon. Minister to encourage and support the young budding sportspersons from all over India to

come up like him to win medals in Olympics. We need him to introduce more schemes for the development of sports in urban and rural areas in India.

I would like to urge upon the Union Government to establish a separate Sports University in Tamil Nadu for the benefit of sports students in Tamil Nadu and other southern States of India. I would also urge upon the Government to provide suitable job opportunities for outstanding sportspersons and encourage them by providing all necessary facilities including financial assistance and top-class training. Thank you, Sir.

HON. CHAIRPERSON: The next speaker is Shri A.P. Jithender Reddy. You would have to conclude in 5-6 minutes. I am calling you out of turn.

श्री ए.पी. जितेन्द्र रेड्डी(महबूबनगर) : महोदय, मुझे तो यहाँ कोई नहीं दिखाई दे रहा है।

माननीय सभापति : यहाँ बहुत लोग हैं। शिवसेना से यहाँ हैं, सभी पार्टियों से लोग यहाँ पर हैं।

श्री ए.पी. जितेन्द्र रेड्डी: यह बहुत ही स्पेशल मुद्दा है।

माननीय सभापति : आपकी रिक्वेस्ट के ऊपर हम आपको जल्दी बोलने का मौका दे रहे हैं।

श्री ए.पी. जितेन्द्र रेड्डी: हर भाषण में हम बोलते हैं कि 75 परसेंट of the population is below 35 years.

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे (गुलबर्गा) : यह इन्विज़िबल गवर्नमेंट है तो लोग कैसे दिखेंगे । The Government is invisible. So, you cannot see it. … (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Hon. Member, please continue.

… (*Interruptions*)

श्री ए.पी. जितेन्द्र रेड्डी : मेरे ख्याल से मैं चश्मा लगाऊँगा, तो थोड़े-बहुत लोग दिख जाएंगे ।

युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय के राज्य मंत्री तथा सूचना और प्रसारण मंत्रालय में राज्य मंत्री {कर्नल राज्यवर्धन राठौर (सेवानिवृत्त)}: सर, मैं काफी हूँ। आप कोई भी

सवाल कीजिए, मैं संभाल लूँगा ।

श्री ए.पी. जितेन्द्र रेड्डी: सर, मैं एक बात बोलता हूँ। आज पूरे देश में जितने भी स्पोर्ट्स खेलने वाले बच्चे हैं, वे आपकी तरफ ही देख रहे हैं।

HON. CHAIRPERSON: Shri Jitender Reddy ji, please start your speech.

श्री ए. पी. जितेन्द्र रेड्डी: हर आदमी यही सोचता है कि एक ओलम्पियन होने के कारण राठौर जी हम लोगों की तक़लीफ समझेंगे, लेकिन आज भी जब वही हाल है तो इसके लिए देश शर्मिन्दा है।

कर्नल राज्यवर्धन राठौर (सेवानिवृत्त): मेरा मौका आने दीजिए ।

श्री ए. पी. जितेन्द्र रेड्डी : सर, आपका मौका कहां आएगा? केवल बोलने का मौका आएगा, काम करने का मौका कहां आएगा?

HON. CHAIRPERSON: Shri Jitender Reddy ji, please start your speech on the Bill.

SHRI A.P. JITHENDER REDDY: Sir, I would like to thank you for giving me time to present my views on the National Sports University Bill, 2018 and also on the status of sports in India. This is an ambitious Bill. It seeks to establish a National Sports University in Manipur and we are supportive of the Government's initiative. Rathore ji, we are cent per cent supporting the Bill.

Despite being a small State, Manipur has set an example for other Indian States by producing remarkable sportspersons over the years. India is in desperate need of a University for fuelling such ambitions. I think the Bill has a wholesome approach by understanding the need of not only training sportspersons but also coaches.

<u>13 46 hrs</u> (Hon. Deputy Speaker *in the Chair*)

I have to start by congratulating India's own daughter, Hima Das, for making us proud at the global level. जिस गति से उसने यह रेस पूरी की है, मैं उम्मीद करता हूं कि उसी स्पीड के साथ इस यूनिवर्सिटी का काम भी पूरा होगा । While Hima Das made us proud and happy at the moment, today, I want to draw the country's attention to a crucial and much neglected area of sports. India's performance has been very poor in majority of sporting events. In the last Olympics at Rio, I was present myself, to watch it, we were ashamed of our performance there. हमारी इज्जत जाते-

जाते बच गई । हमारी तेलंगाना की जो सिंधु है, she brought a Silver Medal, और एक ब्रॉन्ज मेडल के साथ हम बाहर हो गए । 130 करोड़ की अपनी पॉपुलेशन रहते हुए भी why are we so much backward? इसके ऊपर नज़र क्यों नहीं डाली जाती है? When speeches are made everywhere, everybody says that 75 per cent of our population is below 35 years. When we have such a huge strength, and when our physique is good, we can achieve whatever we want for our country. We don't have a proper system. What is happening on our sports front? इसके ऊपर क्यों दृष्टि नहीं डाली जाती है, यह समझ में नहीं आ रहा है।

At the Olympics, we have won a total of only eight gold medals between 1928 and 1980, all in Hockey. After that, our first individual gold medal came in as late as 2008 when Abhinav Bindra won 10-meter rifle event. While we improved our performance and won six medals in London in 2012, as opposed to three during 2008 Beijing Olympics, we only won two medals in Rio Olympics in 2016. That is, one medal for 60 crore people.

India has the worst medal tally per capita. In comparison, China finished third with a medal tally of 70 medals, including 26 Gold medals. They made long-term investment in talent identification from young age, and provided adequate infrastructure and funding.

Now, I would like to talk about the budget allocated to sports. While the budget amount has been increasing, the rate of increase has declined. Studies show a direct co-relation between the money invested in sports and the medals won. While in the last fiscal budget, the budget saw an increase of 21 per cent, in this year's budget allocation, the increase is only 12 per cent. I fail to understand what justifies this reduction in the rate of increase of allocation?

A healthy mind requires a healthy body, and that was the point behind the establishment of Nehru Yuva Kendra. But I got to know that when the Nehru Yuva Kendra asked for about Rs. 800 crore, it was allotted only Rs.250 crore. Further, I would like to highlight that even though we don't have adequate sports infrastructure in the country, the Ministry has decreased the allocation of funds to the Sports Authority of India by 13 per cent.

Sir, after studying accountability measures in sports I feel like there is a test match being played. बहुत दिनों के मेहनत के बाद उनके हाथ में कुछ भी नहीं आता है। यह पता ही नहीं चलता कि स्पोर्ट्स की इस बुरी हालत के लिए कौन जिम्मेदार है। इंडियन ओलंपिक एसोसिएशन कहती है कि वह खुद के लिए गवर्नमेंट से एक पैसा भी नहीं लेती

है, इसलिए इस बारे में मुझसे मत पूछो । जो नेशनल स्पोर्ट्स फेडरेशन है, उसको इतना कम पैसा मिलता है कि उससे रिजल्ट की माँग करने में भी शर्म आती है। For the current financial year, 53 NSFs in India have been allocated only Rs.342 crore. That is roughly Rs.6.5 crore per NSF. This amount has to be further allocated to the State Federations. आपको मालूम है कि वहाँ से 29 स्टेट्स में पैसा जाता है। हमारे बच्चों के लिए कितना पैसा जाता है, कहाँ से जाता है? I say that the children who are really playing today and the people who are really running the Olympic Associations in the States are doing so because of their passion for sports irrespective of caste or creed. The children who are really playing, whether it is athletics or hockey or soft ball or swimming, are the ones who are really interested in those fields.

I have been the Vice President of the Olympics Association for the State of Andhra Pradesh. I am today President of the State Olympic Association of Telangana. With all that experience I can say that sports people are totally neglected. There is no proper infrastructure anywhere. Not only that, there is a calendar given by the NSF. उन लोगों का फेडरेशन के साथ कैलेंडर है कि पहले सब-जूनियर का कीजिए, उसके बाद जूनियर, सीनियर तथा सीनियर नेशनल कीजिए । जो लड़के तथा लड़कियाँ कोचिंग कैंप्स के लिए जाते हैं, वे लोग वहां ठहरते हैं, लेकिन उनको टीए/डीए अमाउंट के लिए भी बहुत सताया जाता है। वहां जो प्रेसिडेंट तथा सेक्रेटरी सेलेक्ट हुए हैं, वे अपने घर से पैसा ले जाकर बच्चों को फीड करते हैं। Then he goes to SAF and submits his bill. लेकिन दो-तीन साल के बाद भी उनको पैसा नहीं मिलता है। फेडरेशन सिर्फ यही कहता है कि आप जूनियर नेशनल, सीनियर नेशनल और नेशनल इवेंट कीजिए, तब आपको पैसा दिया जाएगा । इसके लिए वह कभी-कभी पैसा भी देता है। वे लोग इवेंट करते हैं, उसके बाद बिल सबमिट करते हैं, फिर कई दिनों के बाद उनको पैसा दिया जाता है। Why so much of discrimination against sports? Why is this happening? Is it like running a club? Or is the name of the country involved? आप कहेंगे कि हम कुछ नहीं कर सकते हैं, क्योंकि यह स्टेट का मामला है। जब आप ओलंपिक तथा एशियन गेम के लिए जाते हैं, तो वहां किसका नाम बदनाम हो रहा है? वहां हमारे देश भारत का नाम बदनाम हो रहा है। भारत के स्पोर्ट्समैन के लिए कुछ नहीं हो सकता है। 130 करोड़ लोगों के रहते हुए भी, हमारे देश के बच्चे एक भी मेडल नहीं ला पा रहे हैं। इससे हमारे भारत की इंसल्ट हो रही है। इसके लिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आईओए में जो लोग इतने सालों से बैठे हुए हैं, उनको 4 साल का टर्म दिया गया था,

लेकिन वे 16-16 सालों तक वहां बैठे हुए हैं। मैं जानना चाहता हूं कि वहां वे क्या कर रहे हैं? उनको गवर्नमेंट की तरफ से बिल्डिंग भी दी गई है। सरकार ने उनको किसलिए बिल्डिंग दी है? क्या वे वहाँ बैठक कर पॉलिटिक्स करेंगे? वहां एक नेशनल फेडरेशन बना है, यदि संबंधित व्यक्ति को वह पसंद नहीं आया तो दूसरा नेशनल फेडरेशन तैयार कर देता है। उन दोनों के बीच में लड़ाई हो जाती है। अगर एक स्टेट के अंदर कोई गेम रहता है, यदि उसे पसंद नहीं है तो वह दूसरा चालू कर देता है।

यह क्या तरीका है? Who is losing? The children are losing. मैं आपको एक बात बताना चाह रहा हूं, मेरे ख्याल से मंत्री जी you have also been picked up from a rural area; you have not been picked up from a city or a town. सिटी के अंदर गोल्फ खेला जाता है, नहीं तो इक्केस्ट्रिअन जो गेम खेला जाता है, जिधर यह रहता है, उसके लिए आप बोलते हैं, लेकिन स्टेट्स में विलेजेज के अंदर उसका इनफ्रास्ट्रक्चर कहां है? When you give five per cent 5 per cent for education seats, आप कहते हैं कि गोल्फ वाले को दो, नहीं इक्केस्ट्रिअन वाले को दो । वह गेम क्या है? बीच वालीबाल, तेलंगाना के अंदर बीच कि धर है? हम कहां से बीच लेकर आएं? ये बीच वालीबाल का गेम बोलते हैं। …(व्यवधान) हेल्थ सैक्टर के अंदर आप पीएचसी बना रहे हैं, हर गांव में प्राइमरी हेल्थ सेंटर बना रहे हैं। हर गांव के अंदर अभियान किया जा रहा है, रोड के ऊपर अभियान किया जा रहा है। जिस तरीके से हम आज गरीबों के बीच में पहुंच रहे हैं, तो मैं दावे से बोलना चाहता हूं कि हर गांव के अंदर इनफ्रस्ट्राक्चर रहना चाहिए । मंत्री जी, हमें आपसे बहुत उम्मीद है कि आप जरूर गांव की तरफ देखेंगे । हर विलेज के अंदर, हर मंडल के अंदर आप 'खेलो इण्डिया' का अभियान लेकर आए हैं।

HON. DEPUTY SPEAKER: All healthy people are in villages only; they are good sportspersons.

श्री ए. पी. जितेन्द्र रेड्डी: मैं पूछना चाहता हूं कि वर्ष 2017 तक कौन से मंडल के अंदर इनफ्रस्ट्राक्चर बना है, किधर एकैडमी बनी है, कौन सी जगह एकैडमी बनी है? Simply, if every district has got a proper academy for sports, children and people can come and play. वहां से भी बड़े-बड़े हीरे निकल सकते हैं। We can also have players like Dhoni coming from rural areas. So, I request the hon. Minister to look into what is happening in IOA and Sports Federation. यह सबको देकर, एक-एक आदमी को धोकर, सुखाकर, नई सी इस्त्री करके नया सा परिवर्तन आप ला सकते हैं। …(व्यवधान)

परिवर्तन करके जितने भी हमारे यंगस्टर्स हैं, जो खेलना चाह रहे हैं, जो आगे बढ़ना चाह रहे हैं, जो देश का नाम आगे बढ़ाना चाह रहे हैं, आप उन लोगों को बढ़ावा दीजिए ।

SHRI PRASUN BANERJEE (HOWRAH): Hon. Deputy Speaker Sir, I am very happy to say something here because I am the first footballer MP. You have given a chance to me. I have been captain of India and an Arjuna Awardee. I have represented in Asian Games. … (*Interruptions*)

SHRI SUNIL KUMAR JAKHAR (GURDASPUR): Hon. Deputy Speaker Sir, it is very unfortunate that he has to introduce himself. That shows the plight of the game. I think we have forgotten all other sports at the cost of cricket and yoga. Hats off to you, Sir.

SHRI PRASUN BANERJEE : Thank you, Sir. One of the finest sportsman in our country and the hon. Minister Col. Rajyavardhan Rathore is sitting here. उनको देखकर अच्छा लगता है। लाइफ में हमने देखा कि भारत में कोई स्पोर्ट्स मैन कभी स्पोर्ट्स मिनिस्टर नहीं बना । पहले एक मंत्री असलम शेर खां बने थे, उनके बाद आप आए । इसके लिए हम आपको बधाई देना चाहते हैं। Shri Anurag Singh Thakur is a cricket player. वे रणजी ट्राफी खेल चुके हैं। वह इतना बड़ा काम कर चुके हैं। मैं द नेशनल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी बिल पर बोलना चाहता हूं। Sir, with your permission, I want to speak in my mother tongue.

.... I want to speak in my mother language if you don't mind. I thank you and congratulate you all for allowing me to speak on this very important National Sports University Bill. हम इसलिए बहुत हैप्पी हैं। हम ममता जी को धन्यवाद देना चाहते हैं, जिन्होंने हमें चान्स दिया । I am the first footballer as an MP. This is a wonderful day to me.

But this is a wonderful day to me. I am very proud of the National Sports University Bill 2018. I congratulate the Hon. Minister for bringing this bill as it was the need of the hour. This should have been done earlier, but better late than never. The bill has to be dealt with very seriously Mr. Minister. I would urge upon you that politics should not be involved in the execution of the bill. We

should forget who belongs to which political party. Sports is sports, sports must not be mixed with politics. My first point is that a wonderful thing is going to happen through this bill. This concept was first introduced in Cologne, Germany, thereafter in America. Now it has come to India. Very good. But I think that when SAI was set up, it was excellent in the beginning. Gradually its quality deteriorated and now it is in shambles. This should not be repeated. * प्राइम मिनस्टिर और स्पोर्ट्स मिनिस्टर से एक निवेदन है, आप स्पोटर्स पॉलिसी कहते हैं, सब कुछ करते हैं, स्पोटर्स का बजट बढ़ाइए, जरूरत पड़े तो इलैक्शन से पैसा कम करके स्पोर्ट्स में लगाइए, We are not getting anything. रोटी, आलू और गोबी खाकर वर्ल्ड चैम्पियन नहीं होंगे, It is very difficult. जब हम जीतते हैं तो कई हजार करोड़ रुपये देते हैं, जीतने के पहले खाना नहीं मिलता है, गांव-गांव में घूमते हैं, बच्चे लोग गांव से नहीं मिलते हैं। जरूरत पड़े तो प्राइम मिनिस्टर साहब से बात करके पैसा लाइए ।*....* I know, you are a great sportsperson and an honest person.

14 00 hrs

I think that this should happen. And I also believe that immediately sports should be made compulsory in schools and colleges. Secondly, we must refrain from categorizing sports into district or state levels. It should be of one single nation, without any politics. Wherever we are, we should play together unitedly.* गाँव गाँव में कैसे भी गरीब बच्चे हों, हम लोग ढूढते हैं, कोई बच्चे मिलते नहीं । I am speaking in Bengali. राज्यवर्द्धन जी, आप जरा सुनिये । *....* You are present here Hon. Minister, you are one of the finest sportsmen of India. It should be all sports, not only cricket. All that you are promoting is cricket and cricket.* क्रिकेट बंद करिये, कबड्डी खिलाइये, स्विमिंग पर ज्यादा ध्यान दीजिये, कुश्ती पर ज्यादा ध्यान दीजिये । *...* I think more funds should be allocated for sports, more sponsors should be attracted. Without funds nothing can fructify.* हम जानते हैं कि गवर्नमेंट के पास पैसे की कमी है। हमारे बोलने का मतलब है कि फर्स्ट डिस्ट्रिक्ट और उसके बाद ब्लॉक, सभी जगहों से बच्चों को लाना चाहिए । साई, स्पोटर्स ऑथरिटी ऑफ इंडिया इतना अच्छे से नहीं चल रहा है। आप अच्छा कोशिश कर रहे हैं तब भी अच्छा नहीं है।

*...*You can never play hundred games together, you can never wins gold in hundred games in one go. Please select 6 games first.* छह खेलों पर खर्च

करिये, ट्रेनिंग कराइये । They will get gold every time. हम लोग जो बोलते हैं, निगेटिव बात नहीं होनी चाहिये । हम लोगों की आज ऐसी हालत है जब ओलम्पिक में स्पोट्र्समैन जाता है तो न्यूजपेपर्स बातें कहते हैं कि आप लोग जीत सकेंगे । हमें स्पोटर्समैन मिलेगा । आप लोग क्या कहते हैं, आप जीत सकेंगे । हमारे बच्चे को ट्रॉफी मिलेगी, हर समय निगेटिव एटिट्यूड होता है। हम लोग आईंडोवहजन से मैच खेल रहे थे, हमारे कोच ने कहा कि कितने गोल खाएंगे,*...* How many goals have you scored? No goal. We won that match. All negative approach should be stopped. You should inspire the youths. *

आप लोग जो करना चाहते हैं, हम सोचते हैं कि इधर जो लोग बैठते हैं, सबको सपोर्ट करना चाहिए । इसमें पोलिटिक्स मत लाइए । स्पोर्ट्स में पोलिटिक्स नहीं होनी चाहिए । मैं इस बिल के बारे में एक बात कहना चाहता हूं, भारतवर्ष में अंडर 17 वर्ल्ड कप फुटबाल हुआ था । मुझे यह कहते हुए दुख होता है, पहले फोन आया कि आपको रिसेप्शन देंगे और दस दिन बाद बोले कि नहीं, प्रसून जी आपका नाम नहीं है। हमारा नाम किसलिए नहीं होगा? *....* I got the Arjuna award. I am a three-time Asian Games player. I also got the Rajiv Gandhi Khel Ratna Award. I captained the Indian National Football team. I also captained 1980 pre-Olympics. * इंडिया में हमारी लाइफटाइम में अंडर 17 वर्ल्ड कप हो रहा है, क्या हमें थोड़ी-बहुत रिस्पेक्ट नहीं मिल सकती? क्या हमें रिस्पेक्ट नहीं मिल सकती है ? क्या इधर भी पोलिटिक्स हो गई ? तृणमूल के कारण हमें छोड़ दिया । प्लीज़, ऐसा मत कीजिए । हम भी नहीं करेंगे । हम स्पोर्ट्स में मिलकर चलेंगे ।

मेरा कहना है कि आप इसे स्कूल से शुरु कीजिए । स्पोर्ट्स कम्पलसरी कीजिए । स्कूल से शुरु कीजिए । डिस्ट्रिक्ट में कोई नहीं जाता है, कोई उधर नहीं पहुंचता है। आप किसे भेजेंगे? कोई आईएएस अफसर नहीं, बिग प्लेयर को भेजिए, स्पोर्ट्समैन को प्लेयर को सलैक्ट करने के लिए भेजिए । You are a wonderful sportsman. यहां नेशनल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी बिल की बात हो रही है, यह जरूर होगा, मणिपुर में हुआ, अच्छा हुआ । सब जगह होना चाहिए, Why not Bengal, Punjab or Kerala? पूरे देश में होना चाहिए । पश्चिम बंगाल से फुटबाल में ओलम्पिक कैप्टन डायरेक्ट चार बार गए थे । T.Ao Captain 1948, 1952 में एस. मनन कैप्टन थे, 1956 में बदरु बनर्जी कैप्टन और 1960 में पी.के. बनर्जी कैप्टन थे । All the top sports players are there. सौरभ गांगुली यहां है, सारे ज्युल्स यहां हैं। यहां स्पोर्ट्स मैन्डेट है। बंगाल में स्पोर्ट्स के लिए कुछ नहीं होता है बाकी

सब जगह होता है। आप इन लोगों को सपोर्ट कीजिए । पश्चिम बंगाल में कोलकाता में यूनिवर्सिटी बननी चाहिए ।

आप बंगाल में वर्ल्ड कप कराएं । यहां वर्ल्ड कप फाइनल होगा तो कितना अच्छा लगेगा । इधर जितेन्द्र जी कह रहे थे कि कुछ नहीं हो रहा है, जीरो होकर आ रहे हैं। जीरो तो होगा ही, हमारे देश में ओलिम्पिक्स में दस रुपए खर्च करते हैं, गुआम आईलैण्ड कितना पैसा खर्च करता है, खाना खिलाता है, तैयार करता है। They should be treated as the national property.आप जिसका सलैक्शन करें, वह नैशनल प्रापर्टी है। उसे खाना, पीना, रहना सब देना है। क्या हम रोटी खाकर वर्ल्ड कप जीतेंगे? ऐसे नहीं होगा। हमारी आपकी सरकार से कोई लड़ाई नहीं है। हम पार्टी के लिए भी नहीं बोलते हैं। आप भी हैं, हम भी हैं, सब कोशिश करें । अगर जरूरत हो तो इलैक्शन का पैसा कट कर दीजिए । .... (व्यवधान) हमने तो बड़ाई की है, हमने कहा कि इतना बड़ा प्लेयर जन्म नहीं लेगा । आपको बोलना नहीं चाहिए, हमने तो बड़ाई की है, फर्स्ट अवार्ड मिला, He is the first Silver Medal winner in Olympics. ओलम्पिक में मिला। राज्यवर्धन जी को यह जरूर करना चाहिए, आप इसे पोलिटिक्स में मत गिराइए, इसे छोड़ दीजिए, हमें भी छोड़ दीजिए ।

मैं एक बात बोलकर अपनी बात समाप्त करता हूं, कोई भी खिलाड़ी हो, वह देश की सम्पदा है। In the world of football, Pele is a king. 24 सितम्बर, 1977 को कोलकाता में हम खेले थे । वह हमारे लिए कुछ बोले थे, *....* Pele told me: "Prasun Banerjee, just listen. Play the football, see the world. Be a gentleman and you will fly your National Flag all over the world".*

हम नेशनल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी बिल का सपोर्ट करते हैं।

SHRI KALIKESH N. SINGH DEO (BOLANGIR): Thank you very much, Deputy Speaker, Sir.

I am grateful that you have given me an opportunity to speak on this Bill, that is, 'The National Sports University Bill, 2018'.

Sir, sports is an area which bridges all kinds of gaps. It crosses political differences and the interests of various countries. It can bridge nations together. I

remember a time when India and Pakistan were having a great difficulty between each other in terms of our political relationship. It was the sport of cricket which brought us together and which allowed us to open diplomatic channels again. Therefore, sports is not just a mere physical discipline. It should be looked at by the Government in light of diplomacy; in light of health; and in the light of the well-being of the entire nation as a whole. It if uses solidarity in the nation like nothing else so far.

In that spirit, I was very appreciative of my friend, Shri Anurag Singh Thakur Ji, when he being the Chief Whip of the ruling Party criticised his own Government for not having given enough funds in the area of sports. With the same spirit, I would like to say that I appreciate the gesture of the Government by putting up the National Sports University in Manipur. One of the biggest achievements of this Government is that they have made a sincere and serious attempt to integrate the North-East with mainstream India. Therefore, I welcome this Bill proposed by the hon. Minister of Youth Affairs and Sports.

However, Sir, the question before us is this: Is it too little or too late? The University attempts to create a first of its kind institution to train coaches, teachers, sports officials and also train national level athletes. It will have two or three out lying branches mainly in Lucknow, Mohali and Gwalior. But, all those places are in Northern India and have National Sporting Institutes already. My first question to the hon. Minister is obviously going to be: What happens to the rest of India? Do we not have people interested in sports in Western India, Southern India and especially in Eastern India?

My friend Shri Anurag Singh Thakur talked about the North East. But it is not just them who matter. Sir, Eastern India has been neglected by this Bill. My request to the hon. Minister is to look at the efforts of the Odisha Government where they have partnered with Hockey India to hold and launch many Hockey International events and world cups in Odisha. This is a spirit and the kind of initiative that both the Central Government and every State Government should have. We should ensure that we have the capacity and the infrastructure to hold

national and international events for our country's sports. We can choose those events based on the competence of athletes and the interests of our people. But, this must be mandated and sports must be given the priority. I think, there is, by far, the overwhelming majority consensus for this in the House.

But, Sir, we have seen a decline in the results and the performance of Indian teams. I have full sympathy and support for every sportsmen of each sport who represents India at any international event – be it beach volleyball; be it kabaddi; be it cricket; be it hockey; and be it kho kho. However, we have seen that India has not performed as well as some others do. The numbers do not lie. We have had a decline of 37 per cent in the medal tally at the Commonwealth Games which, were recently held in Glasgow. India has only won 28 medals in its history in the Olympic Games. Is it correct? I would not say that it is shameful at all. I would say that it is our fault. The blame for the poor performance of our athletes is not within the athletes. It is with those people who are in Government; it is with those people who are in the Legislature, who make laws; and it is with those people who run the sports bodies, including myself as I am a Member of the National Rifle Association of India.

Sir, we are unable to provide what is required for sports people to excel. I think, Shri Thakur made a very good reference to that. There are many issues which pervade the world of sports. Not all of it is under the control of the hon. Minister or the Government. We understand that division of offices between the sports bodies, Ministries and the Sports Federation themselves, is immense.

However, we find that the budget of the Government for the sports this fiscal year is a mere Rs.1943 crore. Now I am being told that it is Rs.2000 crore, which is good. But, when we compare that to the budget of the UK, a country which is less than $1/5^{th}$ of our geographic size and less than 5% of our population, the budget there is Rs.9000 crore and in the US, it is Rs.12000 crore. This does not count the private sector's investment in sports which is 5-6 times that amount. In India, we have stifled the sports arena by total Government control or by control of the sports bodies which the Honourable

Member, Shri Jithender Reddy, was referring to. They have become moribund or a 'closed club' which revolve around themselves. We are unable to even put up create the platform for sports to actually get funding from private areas.

What do we need to ensure that sports get sufficient funding? Be it for infrastructure, be it for the training of the athletes, and be it for sufficient wellbeing of the athletes – psychologically and physically, we need money. How will the money come? It will come from sponsorships. Why will private companies sponsor athletes? They will sponsor them because they will be visible on sports media through television, through radio and various other events. Unfortunately, in India, - and my friend, Shri Anurag Thakur, should not take offence at this – cricket hogs the limelight of all sports. It's obvious that, in fact, I am sure he will agree to it. We need to do more to ensure that sufficient advertising money comes towards other sports as well. My friend, Mr. Rathore is also the Minister of State for Information and Broadcasting. The simplest thing that the Government can do is to come up with a code which mandates that all kinds of sports get certain time slots on various television channels and if not on private channels, at least, on Doordarshan. Even DD focuses mainly on three to four sports based on who the administrators are, where they come from and what influence they hold within the current Government. Therefore, the first thing I would request him to do is to ensure that adequate advertising space and media coverage given to sports people.

Sir, we have seen that for excellence sports need encouragement right from day one. Our children generally to spend more time involved with academics work rather than with sports. What we do not understand is that a physically active child is also a more mentally active and mentally developed child. It is good for the physical being as well as for the psychological development of children. That is not something which has been implemented in our education system, especially in rural areas. There is a need to do that. There is a need to ensure that, based on merit and accomplishments, there is a sports quota at every university for admission. That is the only way we can incentivize our schools and parents in rural areas to ensure that they do not force their children to just

focus on academics. If we do not have a sports quota for admissions to universities and if we do not have a sports quota for jobs in PSUs, we are not going to achieve that.

Coming back to the Bill, I have talked about a university being set up in Manipur. There is a lack of infrastructure creation in other States. We need to have, at least, one such Institute of Excellence in every State capital. It is not a tough task. If the Government does not have the money which they obviously do not have with a Rs.2000 crore budget, let them partner with State Governments. I can assure you that the BJD MPs will go and talk to the honourable Chief Minister of Odisha if the Government takes one step to institute a centre of excellence for all sports in Odisha. We have already got one for hockey; we have already got another for archery; but we are willing to expand these further. Let the Government come up with a scheme where people can coordinate with them and ensure that these facilities come up. Otherwise, the Ministry of Sports tends to be only administrative and not one of infrastructure development which is a crying need of the hour.

I liked Mr. Anurag Thakur's suggestion that the Ministry of Human Resource Development should have a budget for creation of sports facilities in every rural school. I completely agree with that and I am sure if the Government of India comes forward, the State Governments also will come and meet them.

The main issue of this Bill is the kind of curriculum it will mandate. If it does not have a curriculum of excellence, then it would be relegated to being another typecast institute which decays over time as interest wanes. I understand that the hon. Minister has signed an MoU with the Universities of Victoria and Canberra in Australia to come up with a sufficient curriculum and training procedure of the teachers there. When the hon. Minister replies, I would like to know what the curriculum is. Good curricula need good teachers. We know that there is a dearth of world-class skilled professionals in the sporting realm in India. It is not an issuing potential; we know there are people who have the potential but they have not received the training required because we do not have

kinds of institutes that can train them. So, where will he get the teachers from? Are the Universities of Victoria and Canberra going to provide us with their professors? The Government must also tell us about the funding of these institutes. We have seen that many SAI institutions have decayed over time. I was witness to it when I used to play Basketball for the State of Uttar Pradesh. I had been to some SAI training camp. The food we got was minimalistic. Comfort was no where to be found. We used to live there in the heat of summers at 45 degrees without electricity; without a single fan. You have to provide minimum comfort levels to the athletes who train there, especially children.

One of the major things that have been happening in sports, which I am shocked and ashamed to see and read in Press, are incidents of sexual assault and the sexualisation of our female sports girls. This is a complete failure of those bodies and also the oversight of the Ministries in this case. Moreover, the issue of women being perceived as physically incompetent for sports persists. We need to have clearly defined roles where gender appreciation and gender sensitivity exist in the sports arena, especially amongst the officials and those in charge.

Sir, with these words, I would like to again state that I support the Bill because: one, it supports the growth of sports and two, because it is in Manipur. But again, it is too little too late and several deficiencies –both with the Bill and sports in India –need to be addressed. Sooner or later, we would like to see many more of these institutes in the Eastern part of India, especially in Odisha.

Thank you.

HON. DEPUTY-SPEAKER: My request to the hon. Members is that you should be very brief because we have to complete the discussion before 3 p.m. We have to take up Private Members' Business at 3.30 p.m. Each Member may speak for five minutes each.

श्री श्रीरंग आप्पा बारणे (मावल) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, केन्द्र सरकार द्वारा 'खेलो इंडिया' की घोषणा करके खेलों को बढ़ावा देने का काम सरकार कर रही है। इसी दिशा में मणिपुर में राष्ट्रीय खेलकूद और विश्वविद्यालय केन्द्र सरकार द्वारा खोला जा रहा है। मैं अपनी पार्टी की तरफ से इसका समर्थन कर रहा हूं। मंत्री जी भी खुद पूर्व खिलाड़ी हैं। देश

के लिए कई गोल्ड मेडल मंत्री जी लेकर आए हैं। जो खेलों में भाग ले रहे हैं, वे सभी पूर्ण रूप से मंत्री जी से आशा करते हैं और मैं माननीय मंत्री जी से मैं कहना चाहता हूं कि आज देश में कई महाविद्यालयों के चौराहों पर युवाओं को अगर देखा जाए तो दस युवाओं में से आठ युवा मोबाइल से अपना समय पास करते हैं।

एक समय ऐसा था कि बच्चे ग्राउंड में जाते थे और खेल खेलते थे । आज बच्चे मोबाइल पर सभी गेम खेलते हैं। यह देश के लिए दुर्भाग्य की बात है। कई छोटे-छोटे देश हैं जिनकी जनसंख्या भी उतनी नहीं हैं, लेकिन उतने ज्यादा मेडल उन्होंने जीते हैं। हमारा देश 130 करोड़ की जनसंख्या का है, आज यह देखने की जरूरत है कि और लोग अन्य खेलों में कितने मेडल लाते हैं। मैं भी कुश्ती में एक पूर्व खिलाड़ी रह चुका हूं। देश के लिए ओलम्पिक में पहला ब्राँन्ज पदक महाराष्ट्र के खाशाबा दादासाहेब जाधव लाये थे । मैं भी कोल्हापुर में कुश्ती खेल रहा था । सरकार ने खाशाबा जी के परिवार की कोई मदद नहीं की ।

आज सरकार द्वारा देश में खेलों के लिए मदद नहीं होती है। जो खिलाड़ी विदेश में खेल खेलने के लिए जाते हैं, वे हमारे पास आते हैं। उनकी परिस्थिति वैसी नहीं रहती है, इसलिए हम से बारबार मदद की मांग करते हैं। मैं सरकार को बताना चाहता हूं कि देश के कई विभिन्न भागों में, खास कर ग्रामीण भागों में बच्चे स्कूल्स में अच्छे गेम्स खेलते हैं। हमें उनके ऊपर ध्यान देने की आवश्यकता है।

उपाध्यक्ष महोदय, किसी राष्ट्र की प्रतिष्ठा, खेलों में उसकी उत्कृष्ठता से बहुत जुड़ी होती है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेलों में अच्छा प्रदर्शन केवल पदक जितने तक सीमित नहीं होता है बल्कि यह किसी राष्ट्र के स्वस्थ मानसिक अवस्था एवं लक्ष्य के प्रति सजगता को सूचित करता है। हाल ही में हुए ‘रियो’ ओलंपिक में भारत ने अब तक के सबसे बड़े दल, 115 खिलाडियों को भेजा था, परन्तु भारत की सफलता अच्छी नहीं रही । प्रत्येक ओलंपिक के बाद, देश में एक सवाल उठता है कि इतना बड़ा देश होने के बावजूद खेलों में बहुत अच्छा प्रदर्शन नहीं होता है, यह सरकार की असफलता है। वह सरकार कोई भी हो, राज्य सरकार, केन्द्र सरकार की असफलता है।

इसके पहले कॉमनवेल्थ गेम्स में भ्रष्टाचार के कई मामले सामने आएं । आज खेलों में भ्रष्टाचार और अपने खिलाड़ियों को सेलेक्ट करने के लिए बढ़ावा दिया जाएगा तो इससे देश में अच्छे खिलाड़ी नहीं बन सकते हैं। आज भी सरकार खेलों के लिए पूरी तरह से बजट का प्रावधान नहीं कर रही है। केवल दो हजार करोड़ रुपये का प्रावधान इसके लिए किया गया है, जो दुर्भाग्य की बात है। इतने बड़े देश में खेलों के लिए बजट की कमी है।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं मंत्री जी को यह सूचित करना चाहता हूं कि जिस प्रकार देश के विभिन्न कार्यों में सीएसआर फंड का उपयोग होता है तो क्यों नहीं हम खेलों को बढ़ावा देने के लिए सीएसआर फंड का प्रावधान करें? हम एमपी लैड फंड से खेलों को सहायता नहीं दे सकते हैं। मैं यह भी सूचित करता हूं कि एमपी लैड फंड खेलों के लिए कर दिया जाए तो खेलों को बढ़ावा मिलेगा ।

मैं मंत्री जी और सरकार को आखिरी बात सूचित करता हूं कि देश के कई युवाओं में टैलेंट भरे हुए हैं, उनको ऊर्जा देने का काम सरकार द्वारा की जाए । मैं इस बिल का समर्थन करता हूं। धन्यवाद ।

SHRI M. B. RAJESH (PALAKKAD): Sir, I would conclude my speech in ten minutes as this is an important discussion and I am getting this opportunity to discuss about sports for the first time in my last nine years' experience as a Member of Parliament.

Sir, I welcome this legislation to set up a National Sports University. It took four years to bring this legislation and to implement it whereas the Budget announcement for this was made on 10th July, 2014. This long delay itself shows the lack of priority that we are giving to sports. I have great regard for the hon. Minister of Sports who himself is an Olympic Medal Winner though I do not have that for his politics. I hope, he will understand and agree with me.

When we are setting up a Sports University in 325 acres, remember that China had the Beijing Sports University long back in 1993, that is, 25 years ago. That Sports University is in 1400 acres. I agree with Shri Anurag Singh Thakur who rightly pointed out that allocation for sports is grossly insufficient. China has 26 world class Sports Universities and 100 colleges dedicated for sports education. This is the comparison between India and China. This lack of priority is evident in our performance in all events including Olympics.

In the recent Rio Olympics, when 87 countries shared 974 Medals between them, our tally was just 2 medals. Those two medals were won by Women Athletes; women sportsperson. I remember a famous tweet of that time -- "In India, from vegetables to Olympic Medals are brought by women." I

remember that tweet and that is a regard for our Women Athletes. In the Olympic year of 2015-16, Anurag*ji* rightly pointed out and I would add to what Anurag*ji* said. In the Olympic year of 2015-16, your Government reduced the allocation for Sports Ministry by Rs. 164.81 crore. It again happened in the year 2016-17…. (*Interruptions*)

SHRI ANURAG SINGH THAKUR : I want to clarify that I never said this.

SHRI M. B. RAJESH : Yes, I agree that you have not said this. I am just adding to your point…. (*Interruptions*) Sir, the Olympic Medal for us is 1 medal per 65 crores of people while a tiny country like Jamaica has an Olympic Medal for every 2.47 lakh population. So, this is the comparison. Sir, again India is spending Rs. 3 per day *per capita* on sports while United Kingdom is spending Rs. 22, seven times higher and the USA is spending Rs. 50, sixteen times higher. So, this is the level of under investment in sports in our country. Sir, I do not want to go into that details.

Sir, why are we lagging behind? It is because of lack of priority. Recently, we saw a small country like Croatia. The population of Croatia is 40 lakh, almost equal to the number of people left out in the Assam's NRC. Sir, Croatia played and reached the finals of the Football World Cup. They have produced great legendary players like Modric, Perisic and Rakitic. Why are we not able to do that? It is because of lack of priority.

Sir, there is a film about a Hockey Legend from Punjab, '*Soorma.*' So, the story of Hockey has become a story of lost glory. We were world champions in 1975 and we had won 8 Olympic Gold Medals in Hockey. But, now, this has become a story of the past glory. It is very unfortunate. I wonder, in this Bill, why you have not provided for a Branch of this Sports University in a State like Kerala, which is considered as a Gold Mine of Indian Athletics. Kerala has produced Legendary Athletes like P.T. Usha, Anju Bobby George, the first ever Athlete who had won a Medal in World Athletics Meet, Preeja Sreedharan and P.U. Chitra who belongs to my own Parliamentary Constituency.I do not understand as to why you have not provided a Branch of this University in

Kerala. I demand either a Branch of this University or a Centre of Excellence in Sports in Kerala especially with focus on Athletics, be set up. Sir, I have a few more points especially with focus on Athletics. Hon. Minister, I promise you that I will talk to the Chief Minister; I will talk to the Government of Kerala and I assure you that the Government of Kerala will provide you land if you are ready to set up a Centre of Excellence for Athletics in Kerala.

Sir, I have two more points to speak. The first is regarding the approach of authorities towards Athletics. I would like to share one of my recent experiences. I told you about P.U. Chitra, who belongs to my own place. I know her since her school days. Hima Das, whom we congratulated just at the beginning of this Session, belongs to a poor family. Likewise, P.U. Chitra belongs to a poor family. Currently she is undergoing a high-altitude training in Bhutan as part of her preparation for the Asian Games. She was asked to attend an interview for an appointment in Income Tax Department in Chennai. But, her coaches said that she should not go because that would affect her coaching. Therefore, I tried to get that date of interview postponed till the Asian Games are over. But, Hon. Minister, I am bringing to your notice that the Income Tax Department declined and insisted that she should come and attend the interview, giving up her coaching.

Then, I spoke to our State Sports Minister and he assured me and said, 'we will give her a job, ask her to concentrate on training and coaching and come back successfully from Jakarta Asian Games'. So, this is the approach of our authorities towards sports persons. I hope the Sports Minister will look into that.

Finally, what is the state of our sports administration in the country? It is a terrible state of affairs as far as sports administration in the country is concerned. George Bernard Shaw once said, 'politics is the last refuge of a ...*'. I would like to amend that.

HON. DEPUTY SPEAKER: No, do not make such a remark. We, ourselves, are politicians. That will not go on record.

… (*Interruptions*)

SHRI M. B. RAJESH : All right. I am sorry. … (*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: Why should we call ourselves as ... * It is not correct. Whatever the British people said, you want to repeat everything. That will not go on record.

… (*Interruptions*)

SHRI M. B. RAJESH : Sir, I withdraw it.

My point is that the state of affairs of sports administration in our country is very bad. I hope everybody will agree with that. Let me quote a report which appeared in *The Indian Express* few days back. *The Indian Express* reported that out of two key officials, who are leading the Indian Sports Contingent to Jakarta Asian Games, one was jailed for one year for his role in Commonwealth Games corruption case and in the case of another official, his appointment as Joint Director General of Commonwealth Games was investigated by CBI after CVC alleged misuse of power by him. Now, these people are leading our Sports Contingent to Jakarta Asian Games. What message will it send to the country?

Lastly, I would request the hon. Sports Minister and the Government of India to look into these things. I would also request him to please clean up the sports administration and find resources to find out, train and develop sports talent which is in abundance in this country. With these words, I conclude.

श्री धनंजय महाडीक (कोल्हापुर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं अपनी पार्टी की ओर से 'द नेशनल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी बिल' का समर्थन करने के लिए यहाँ पर खड़ा हूँ।

हमारा देश बहुत बड़ा है। यहाँ 125 करोड़ लोग रहते हैं। लेकिन हमें बहुत कम ओलम्पिक मेडल्स मिले हैं। ओलम्पिक में एक मेडल हमें जिनके माध्यम से मिला है, वे हमारे स्पोर्ट्स मिनिस्टर श्री राठौड़ जी हैं। वे यह स्पोर्ट्स बिल लेकर आये हैं, इसके लिए मैं उनको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

मणिपुर, जो स्टेट ऑफ आर्ट्स है, में यूनिवर्सिटी स्थापित करने के लिए यह बिल लाया गया है। इस विश्विविद्यालय की स्थापना से राष्ट्रीय खेल पर्यावरण में जो खामियाँ हैं, जो अंतर हैं, जैसे टेक्नोलॉजी, स्पोर्ट्स साइंस, हाई परफॉर्मेंस ट्रेनिंग मैनेजमेंट आदि को भरने का प्रयास इस बिल के माध्यम से होने वाला है। खेल विज्ञान के विकास और एथलेटिक्स में प्रशिक्षण के लिए बुनियादी ढाँचा और हाई स्टैंडर्ड इंफ्रास्ट्रक्चर बनाने का काम भी इस बिल के माध्यम से होने वाला है। स्पोर्ट्स बैचलर्स, मास्टर्स डिग्री, रिसर्च एंड ट्रेनिंग सेन्टर्स, एकेडमिक प्रोग्राम्स, स्पोर्ट्स ऑफिशियल्स, रेफरीज़, अम्पायर्स आदि बनाने के काम भी इस बिल के माध्यम से होने वाले हैं।

इस विश्वविद्यालय को वर्ल्ड क्लास का बनाने के लिए ऑस्ट्रेलिया के दो यूनिवर्सिटीज- यूनिवर्सिटी ऑफ केनबरा और विक्टोरिया यूनिवर्सिटी के साथ टाई-अप किया गया है। करिकुलम और रिसर्च फैसिलिटी, लेबोरेट्रीज डेवलपमेंट भी इस बिल के माध्यम से होने वाली है।

हम लोग बचपन से एक कहावत सुनते आए हैं।

पढ़ोगे-लिखोगे, बनोगे नवाब,

खेलोगे-कूदोगे, बनोगे खराब,

लेकिन हमारे मंत्री जी एक नया स्लोगन लेकर आए हैं। श्री अमिताभ बच्चन जी का एक नया विज्ञापन आता है कि

पढ़ोगे-लिखोगे, बनोगे नवाब,

खेलोगे-कूदोगे, बनोगे लाज़वाब ।

मैं आपकी इस सोच की सराहना करता हूँ। लेकिन मैं देश के सभी लोगों से कहना चाहता हूँ कि जिस तरह से पढ़ाई अहम है, उसी तरह से खेल भी अनिवार्य है।

स्कूलों और कॉलेजों में स्पोर्ट्स कंपल्सरी करना जरूरी है क्योंकि हमारे देश के दस बच्चों में से चार-पाँच बच्चे अनफिट हैं। कोई ओवरवेट होता है, तो कोई अंडर डिप्रेशन होता है। आज डिप्रेशन क्या है? यदि कोई बच्चा दसवीं क्लास में फेल हो जाता है, तो वह सुसाइड कर लेता है।

अगर उनको नौकरी नहीं मिलती है, तो वे सुसाइड कर लेते हैं। स्पोर्ट्स एक ऐसा ज़रिया है, अगर ये बच्चे-युवा स्पोर्ट्स में जाते हैं, तो उन्हें यह डिप्रेशन कभी नहीं आता है।

हम स्पोर्ट्समेन हैं, स्पोर्ट्स में हम जीतते और हारते हैं। हमारी लाइफ में स्पोर्ट्स बहुत अहम रोल प्ले करता है। हमें यह जानना होगा कि आजकल के पैरेंट्स अपने बच्चों को स्पोर्ट्स में जाने की इजाज़त क्यों नहीं दे रहे हैं? इसकी वजह यह है कि उन्हें लगता है कि स्पोर्ट्स से उनके बच्चों को रोज़ी-रोटी नहीं मिलेगी । जिस पैसे से उनका घर चलेगा, वह पैसा स्पोर्ट्स से नहीं आने वाला है, आजकल के पैरेंट्स की यह दिमागी हालत हो चुकी है।

उपाध्यक्ष जी, हमें इसे बदलने की ज़रूरत है। हमें यूथोपिया जैसे छोटे देशों का एग्ज़ाम्पल लेना होगा । वहां का यूथ स्पोर्ट्स ज्वाइन कर रहा है और वहां टैलेंट बढ़ रहा है। गवर्नमेंट उनको ट्रेनिंग फैसिलिटीज़ और लाइवलिहुड का एश्योरेंस भी दे रही है।

HON. DEPUTY SPEAKER: Please conclude, now.

SHRI DHANANJAY MAHADIK: Sir, I have not taken even two minutes.

HON. DEPUTY SPEAKER: Please try to conclude because by 3 o' clock, we have to pass this Bill.

SHRI DHANANJAY MAHADIK: Sir, I will try to be very brief. हमें चाइना और जापान का उदाहरण भी लेना होगा । वहां के बच्चों को छह साल की उम्र से ट्रेनिंग देने की शुरुआत की जाती है, जिसके कारण वे बच्चे आज बहुत सारे मैडल्स लेकर आ रहे हैं। अगर हम दुनिया में स्पोर्ट्स का शेयर बजट देखें, तो वह 40 लाख करोड़ रुपये है और अगर हम अपना बजट देखें, तो भारत का स्पोर्ट्स का बजट दो हजार करोड़ रुपये का है। यू.के. का स्पोर्ट्स बजट नौ हज़ार करोड़ और यू.एस. का स्पोर्ट्स बजट बारह हज़ार करोड़ रुपये का है। कॉलेजों में इसे कम्पलसरी करने के लिए यूनिवर्सिटी के साथ जोड़ने की जरूरत है।

आज इसकी भी ज़रूरत है कि देश के विभिन्न भागों में जो-जो खेल प्रचलित हैं, जैसे बंगाल और गोवा में फुटबॉल प्रचलित है, कोल्हापुर में कुश्ती प्रचलित है, और मुंबई में क्रिकेट प्रचलित है, इसलिए इन जगहों पर हमें सैंटर्स ऑफ एक्सिलेंस बनाने की कोशिश करनी चाहिए । इस बिल में एस.ए.आई. (साई) का ज़िक्र कहीं नज़र नहीं आ रहा है। साई के बच्चों को हम एक हजार रुपये का स्टाइपंड देते हैं। आजकल बच्चों की जो खुराक है, उन्हें जो प्रोटीन्स और विटामिन्स चाहिए, उनके अनुसार एक पहलवान बनाने में करीब 15-20 हज़ार रुपये का खर्चा आता है। एक क्रिकेटर बनाने में 50 हज़ार रुपये खर्च होते हैं। इसका कोई प्रोविज़न भी इसमें नज़र नहीं आ रहा है, इसलिए मैं मंत्री जी से यह मांग और

आग्रह करता हूं कि सिर्फ मणिपुर, लखनऊ और मोहाली में हीं नहीं, उसकी ब्रांचेज़ महाराष्ट्र में भी खोली जाएं ।

मैं कोल्हापुर से आता हूं। देश का पहला ओलंपिक मैडल कोल्हापुर से आया था, जिसे खाशाबा जाधव जी लेकर आए थे । हमारे यहां से कई बच्चे ओलंपिक्स में गए हैं। वीरधवल खाड़े स्विमिंग और तेजस्विनी सावंत शूटिंग में गई हैं। इंफ्रास्ट्रक्चर नहीं होने की वजह से ये बच्चे बाहर जाकर ट्रेनिंग करते हैं। मैं खुद नैशनल स्तर पर बॉक्सिंग और रेसलिंग खेल चुका हूं । मेरा बेटा फॉर्म्युला-3 कार रेसिंग में वर्ल्ड चैंपियन है। हमारे देश में कार रेसिंग क्यों नहीं होती है? हमारे देश में कार रेसिंग को बढ़ावा देने की ज़रूरत है।

सर, मैं एक बहुत इंपॉर्टेंट सजेशन देना चाहता हूं। हमारे देश में एक सी.एस.आर. फंड है, जिससे बहुत अच्छा काम हो रहा है, लेकिन यह काम सिर्फ कुछ क्षेत्रों में ही हो रहा है, जैसे एनवायरनमेंट में काम हो रहा है, शौचालय बनाने में हो रहा है, एजुकेशन में हो रहा है। इसी प्रकार स्पोर्ट्स में आज जो 500 करोड़ रुपये का दायरा है, उसे 200 करोड़ रुपये करने की ज़रूरत है। पांच करोड़ रुपये के प्रॉफिट को दो करोड़ रुपये करने की ज़रूरत है और सी.एस.आर. का जो दो परसेंट होगा, उसे टैक्स फ्री करने की ज़रूरत है। स्पोर्ट्स में 25 परसेंट सी.एस.आर. बनता है। अगर हम 25 परसेंट स्पोर्ट्स में देंगे, तो इससे खेलों में बहुत अच्छी वृद्धि हो सकती है। इंफ्रास्ट्रक्चर में भी इसका बहुत अहम फायदा हो सकता है। सांसदों के फंड्स के लिए भी हमारे कई साथियों ने कहा। इंटरनैशनल या नैशनल खेलने के लिए बच्चों के पास पैसे नहीं होते हैं। वे बच्चे हमारे पास आते हैं। आप हमें उन बच्चों को एम.पी.लैड. द्वारा मदद करने की इजाज़त दीजिए । कोल्हापुर में भी एक स्टेडियम होना चाहिए । मैं यह मांग करता हूं कि कोल्हापुर में भी एक क्रिकेट स्टेडियम बनाया जाए । वहां कुश्ती, बॉक्सिंग और शूटिंग है। स्विमिंग में हमारे यहां से लोग ओलंपिक में जा चुके हैं। कोल्हापुर में हॉकी टर्फ का प्रपोज़ल दो सालों से आया हुआ है। आप उस पर रोशनी डालिए । दो सालों से हमने सारी क्वेरीज़ पूरी की हैं। मेरा लास्ट प्वाइंट है कि जिस तरह मरीज़ों को कोई दिक्कत आने पर हम एम.पी.लैड से रिकमंडेशन देते हैं, तो पी.एम. रिलीफ फंड से उनको मदद मिलती है। क्या हम कोई ऐसा कॉरपस फंड बना पाएंगे, जिससे हम अपने देश के बच्चों को रिकमंड करें और आप उनकी सहायता करें? इसी के साथ मैं इस बिल का समर्थन करता हूं। धन्यवाद ।

SHRIMATI KOTHAPALLI GEETHA (ARAKU) : Hon. Deputy-Speaker, Sir, I am thankful to you for giving me this opportunity to speak on the National Sports University Bill, 2018.

At the outset, I would take this opportunity to wholeheartedly congratulate the hon. Minister for his wonderful initiatives in enhancing the sports activities in the country. I feel that it is a great revolution like never before. India is becoming serious about sports.

I thank the young and the dynamic Minister, who himself is a sportsperson, for bringing up this Bill for the establishment of a National Sports University, which is one of its kinds. I firmly believe that it will bring in a boost in inculcating the sports culture among the people of the county.

The year 2017, under the leadership of the dynamic Minister, has been momentous year for Indian sports. Indian sportspersons have brought many laurels to the country in this year, particularly, women sportspersons. In particular, I can make a mention of P.V. Sindhu, Kidambi Srikanth, Sai Praneeth from Andhra Pradesh, Saina Nehwal and many others who have won laurels in other sports activities like women's cricket for the first time, weightlifting, para athletics, shooting, fencing, wrestling, field and track events. But at this juncture, I would like to state that whatever we have achieved till now is not in any way matching to the wonderful potent and talent that India possesses. I fully agree that sports is a State subject but without the cooperation of the Union Government, State also cannot function properly because this is something to do with the national events.

Sports infrastructure plays a crucial role in achieving excellence in the global arena of sports. It not only helps in producing sportspersons of international repute but also encourages the youth population of a country to participate in sporting activities.

In India, the standard of sports infrastructure is not satisfactory. The lack of infrastructure facilities is one of the major impediments in the process of development of sports in India.

When I talk of the sports infrastructure, I would like to emphasize on the infrastructure right from the grassroot level or the school level.

I would also like to make some suggestions. Being a Member of the Standing Committee on HRD, we have toured extensively and visited many centres of the Sports Authority of India in the country. We have interacted with very eminent personalities. We need to bring in revolutionary change in the system of education and sports should be included in the school curriculum in every school. Now, the corporate schools are discouraging sports and there are no playgrounds. If sports is included in school curriculum, it will be a good step.

Sir, I would only like to make two points. The Action Plan should be evolved to identify the local talent, particularly, sports persons should be given jobs security. The funding should be made available to the sports persons. SAI is lacking in funds and many of the projects which are taken up by SAI have been stalled due to lack of finance. Even, the contractors are not doing their work properly. The NSDF should be given a wide publicity.

I would like to say that we have to stretch beyond if we want that the demographic dividend, which we have, should not become a demographic disaster. The youth talent, the young, should be allowed to focus their energies in a positive way. Here, I would like to quote a famous author Bishal Syam who said, 'push harder than yesterday if you want a better tomorrow'.

With this, I support the Bill, Sir, and, I feel, that this will go a step ahead in promotion of sports activities and not just become another SAI.

SHRI RAM MOHAN NAIDU KINJARAPU (SRIKAKULAM): Thank you very much, Sir, for giving me the opportunity to speak on this important Bill, the National Sports University Bill, 2018.

On behalf of my Party, I would like to support this Bill. It is a wonderful Bill and we are happy to see that for the first time there is a sportsman, who has represented India at the international level, to be at the helm of affairs in Sports

Ministry also. We say this with a lot of hope that the country is going to see much better future in terms of sports also.

There are a lot of issues that have been brought about. The points that I wanted to make have already been brought about. But I would want to reiterate one important quotation of Mr. Nelson Mandela about sports:

> "Sport has the power to change the world. It has the power to inspire. It has the power to unite people in a way that little else does. It speaks to youth in a language they understand. Sport can create hope where once there was only despair. It is more powerful than government in breaking down racial barriers."

That is the importance of sports in any culture, in any country across the world. That is something, we also have to keep in mind. Setting up of Sports University in Manipur is a very very important step that this country is going to take. I hope that there will be more sports universities to be coming and this is the first step that the Government is taking. There are two neglected areas, one is the North East and the other one is the sports. So, combining both and establishing the sports university is Manipur in a very good step forward. But, we hope that there will be a lot of other sports universities and regional centres affiliated to this sports university to be coming up in the future. From the State of Andhra Pradesh, we would require that, at least, one regional centre affiliated to this should be established in the State of Andhra Pradesh. We would also like to recommend for the hosting of the National Games. Our Chief Minister has been recommending that for a long time. I do not know how this schedule has been prepared but, definitely, the Central Government should look into it.

Sir, there are a couple of points which I would like to make here.

Other than that, funding seems to be the major issue. I hope, everyone understands – even the Ministry also understands – that the ideas or the forming the policy is never an issue, but the implementation of the ideas and the policy has always been the issue. The last National Sports Policy was formed in 2001.

It is definitely outdated. Some of the points can be picked up from that policy. But, it is time that a new policy be formed. When a new policy is formed, the concerned stakeholders should also be brought in and the State Governments should also give their own representation for this. That is what I would like to recommend.

I would like to say one more thing. When the Indian Football Team Captain Sunil Chhetri *ji*, was experiencing a very low crowd when India was playing recently, he made a strong appeal. He appealed that people should come and support football also. Through Facebook, through social media he made an appeal and lakhs of people have started watching football. There is house full in the stadiums. Imagine, when one sportsman gives a call through social media and if these kinds of sportsmen are sitting at the helm of affairs, in the institutions which are taking decisions towards sports, then they can be more influential in the betterment of the future of sports. That is why, I recommend that more sportsmen should be included in decision-making regarding sports.

Thank you very much.

श्री नन्दकुमार सिंह चौहान (खण्डवा) : उपाध्यक्ष महोदय, आज इस सदन में खेल जगत पर एक इतिहास रचा जा रहा है। आजादी के 70 साल बीत गए, लेकिन देश में खेल यूनिवर्सिटी नहीं थी । मैं देश के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी और उनके खेल मंत्री श्री राज्यवर्द्धन सिंह राठौर को बधाई देना चाहता हूं । उन्होंने आज इस बिल के माध्यम से राष्ट्रीय खेल कूद विश्वविद्यालय विधेयक, 2018 के माध्यम से हिन्दुस्तान को यह बता दिया कि हम देश को बदलना चाहता हैं।

"हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि सूरत बदलनी चाहिए ।
मेरे सीने में न सही, तेरे सीने में सही,
वो आग जलनी चाहिए ।"

खेल को लेकर एक स्प्रिट इस देश में पैदा हो, खेल के मामले में हम बहुत पिछड़ गए हैं। दुनिया के छोटे-छोटे देश खेल के आसमान में चमकते हुए सितारे बने हैं। लेकिन हमारा 125 करोड़ की आबादी का देश खेल के आसमान में मात्र जुगुनू की तरह चमक रहा है। वह खेल जगत का सितारा बने, इसलिए एक बहुत अच्छी कोशिश राष्ट्रीय खेल कूद विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ आज इस देश में होने जा रही है। फुटबॉल के राष्ट्रीय खिलाड़ी हमारे प्रसुन जी ने बहुत अच्छी बात कही कि खेल में राजनीति नहीं होनी चाहिए । उन्होंने बहुत सही और खरी बात कही है। इस देश का दुर्भाग्य रहा है कि इस देश में खेल को राजनीति और राजनीति को खेल बनाया गया । यह परिस्थितियां बदलने के लिए आज खेल की दिशा में सरकार ने मजबूत कदम उठाए हैं। देश में युवाओं में खेल के प्रति आकर्षण बढ़े, खेल से युवाओं का जुड़ाव हो, इसके लिए नरेन्द्र मोदी जी ने खेलो इण्डिया के माध्यम से खेल गतिविधियों को संचालित करने का माध्यम दिया है। 'इण्डिया खेलो', मतलब सब लोग खेलें, हर राज्य खेले । मैं आग्रह करना चाहूंगा कि जितने भी स्पोर्ट्स के फेडरेशन्स हैं, ये खिलाड़ियों के साथ बराबर न्याय नहीं कर पाते हैं।

उसका कारण है, उसमें पॉलिटिक्स का होना । खेल जगत इससे मुक्त हो, ताकि प्रतिभावान खिलाड़ी हम जगह-जगह से टेक अप करके, देश और दुनिया को श्रेष्ठ खिलाड़ी दे सकें । माननीय खेल मंत्री जी, अच्छे प्रतिभाशाली खिलाड़ियों का चयन करने के लिए आपको अच्छे प्रतिभावान खिलाड़ियों को इस काम में लगाना पड़ेगा । स्पोर्ट्स ऑफीसर्स पारदर्शिता के साथ प्रतिभावान खिलाड़ियों का चयन करें । होता यह है कि हम तैराक महानगरों में से ढूंढ़कर लाते हैं। स्वीमिंग पूल में तैरने वाला देश का अच्छा तैराक नहीं हो सकता है। गंगा में गोते लगाने वाला, गंगा में डुबकी लगाने वाला, समंदर के किनारे तैरने वाला ही देश और दुनिया का अच्छा तैराक बन सकता है। हमें ऐसे अच्छे सेलेक्शन करने के लिए क्राइटीरिया तय करने पड़ेंगे । लंबी दौड़ के लिए पहाड़ी लोग मुफीद होते हैं। मैराथन दौड़ के लिए आप पहाड़ी लोगों में से खिलाड़ियों को चुनिए । तैराकी के लिए केवट हैं और मल्लाह हैं, इस प्रकार के लोग जिनका जीवन जल के साथ ही बीतता है, उन प्रजातियों और जातियों में से तैराकों को चुनिए । तब जाकर आप ओलंपिक स्तर के तैराक ढूंढ़ सकते हैं। यदि हम पहाड़ियों को मैराथन दौड़ के लिए चयनित करेंगे तो हमको अच्छे धावक मिल सकते हैं। क्या कारण है कि जैमेका जैसा देश, जिसकी आबादी मात्र 30 लाख है, वह आज पूरी दुनिया के सामने खेल जगत में अपना नाम कमा रहा है। इथोपिया, मैराथन दौड़ में आज पूरी दुनिया में नाम रोशन कर रहा है। चीन बैडमिंटन में नाम रोशन कर रहा है। एक समय था, जब हमारा हाकी में डंका बजता था । आज तक मेजर ध्यानचन्द्र जैसे विश्व स्तर का खिलाड़ी हाकी की दुनिया में पैदा नहीं हुआ है। उसे हमारे

हिन्दुस्तान ने दिया था। लेकिन आज उस ध्यानचन्द्र का चयन कौन करेगा? ऐसे ध्यानचन्द्र कौन ढूंढ़कर लाएगा? ऐसे सेलेक्शन के लिए पूरी पारदर्शिता के साथ एक मैकेनिज्म को खड़ा करना होगा । इस देश में प्रतिभाओं की कमी नहीं है। प्रतिभाएं कुंठित हो जाती हैं। रसूखदार लोग खेलों में जगह तो पा जाते हैं, लेकिन वे अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं, जिस कारण से देश का नाम आगे नहीं बढ़ पाता है। मैं माननीय खेल मंत्री जी से आग्रह करूंगा कि खेल बजट को भी बढ़ाना चाहिए । अब वक्त आ गया है कि दुनिया जिस तेजी से खेल जगत और अन्य क्षेत्रों में आगे बढ़ रही है, हमारे प्रधानमंत्री जी का यह उद्देश्य है कि भारत को एक खेल शक्ति बनाना है। खेल शक्ति बनाने के लिए एच.आर.डी. मिनिस्ट्री और स्पोर्ट्स मिनिस्ट्री को क्लब करके काम करना होगा । जब तक स्कूलों में खेल एक कंपलसरी सबजैक्ट नहीं बनेगा और युवा बालक खेल के मैदान से नहीं जुड़ेगें, तब तक हम खेल जगत में जहां पहुंचना चाहते हैं, वहां तक हम नहीं पहुंच पाएंगे । आज खेल मंत्री जी ने खेल विश्वविद्यालय बिल लाकर बहुत अच्छा काम किया है । ...(व्यवधान)

श्री धर्म वीर गांधी (पटियाला) : उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अवसर प्रदान किया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। मैं स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी बिल, 2018 के समर्थन पर बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं अपने कुछ अनुभव और कुछ सुझाव के आधार पर कुछ बातें कहना चाहता हूं। माननीय खेल मंत्री जी, खुद एक बहुत बड़े स्पोर्ट्स मैन रहे हैं। उनके हाथ में आज यह मंत्रालय है। मुझे इसकी पूरी आशा है कि आज हिन्दुस्तान की खेल जगत में जो स्थिति है, उसके सुधार के लिए वह प्रर्याप्त प्रयास करेंगे । आज हमारा देश सबसे यंगेस्ट नेशन के तौर पर जाना जाता है। हमारे पास यह एक ऐसा डैमोग्राफिक डिविडेंड है, जिसका हमें भरपूर फायदा उठाना चाहिए । यह फायदा हमेशा रहने वाला नहीं है। इसकी एक निश्चित अवधि है। अगर आज हम इसमें चूक गए तो यह पता नहीं कि हमें ऐसा मौका दोबारा कब मिलेगा ।

<u>15 00 hrs</u>

इसलिए जिस देश की 130 करोड़ की आबादी हो, जहां सबसे ज्यादा युवाओं की संख्या हो, वहां खेल मंत्रालय के लिए महज दो हजार करोड़ रुपए का बजट बहुत नाकाफी है। इसके चलते जो हमारे देश में खेलों की स्थिति है, उसमें कोई बड़ा सुधार कर पाना मंत्री जी के लिए मुश्किल है। मैं विनती करता हूं कि आप चाहे माननीय प्रधान मंत्री जी से इसके लिए और बजट की मांग करें, चाहे कारपोरेशन सोशल रिस्पांसिबिलिटी फंड से खेलों की तरफ और पैसा लाया जाए, ताकि हम स्पोर्ट्स को बढ़ावा दे सकें ।

मेरी दूसरी बात यह है कि माननीय सदस्य ने बिल्कुल ठीक फरमाया कि हम जो टेलेंट ढूंढते हैं, उसमें बहुत बड़ी कमी है। हम टेलेंट मेट्रोपोलिटन शहरों में ढूंढते हैं, बड़े शहरों में ढूंढते हैं। मैं समझता हूं कि अगर हमें स्विमिंग का टेलेंट ढूंढना है तो आप नदियों के किनारे बसने वाले गांवों में जाइए, समुद्र के किनारे बसने वाले मछुआरों के पास जाइए, तालाबों में सुबह-शाम छलांग लगाने वाले बच्चों के पास जाइए, वहां टेलेंट भरा पड़ा है। अगर आपको धावक ढूंढने हैं तो आप आदिवासी क्षेत्रों में जाइये, जहां लोग बीस-बीस किलोमीटर रोज चलकर दिनचर्या के काम करते हैं, सामान आदि खरीदते हैं। बच्चे बीस-बीस किलोमीटर पैदल चलकर स्कूल जाते हैं, वहां आपको टेलेंट मिलेगा । आपको मेट्रोपोलिस और बड़े शहरों में टेलेंट नहीं मिलेगा। यदि यहां टेलेंट मिलेगा तो वे इनडिविजुअल गेम्स में मिलेंगे । राइफल शूटिंग मिलेगी, पिस्टल शूटिंग मिलेगी, लॉन टेनिस मिलेगा, जो अमीरों के खेल हैं, वे मिलेंगे। जो देश को गर्व दिला सकते हैं, वे टेलेंट आपको गांवों में, आदिवासी क्षेत्रों में मिलेंगे और मैं समझता हूं कि वहां आपको जोर लगाना चाहिए, वहां टेलेंट ढूंढना चाहिए ।

अंत में मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि जब हमारे खिलाड़ी जीतकर आते हैं तो हम उनको बहुत सम्मान देते हैं, हम उन्हें मैडलों और पैसों से लाद देते हैं। मगर जब वे खेल रहे होते हैं, जब वे मेहनत कर रहे होंते हैं, उस स्टेज पर उनको कोई प्रोत्साहन नहीं मिलता, कोई सहारा नहीं मिलता और बहुत से लोग निरुत्साहित होकर खेल छोड़ देते हैं। मैं समझता हूं कि उस स्टेज पर दखल देना हमारे लिए बहुत जरूरी है।

महोदय, खेल समाज पर कितना प्रभाव डाल सकते हैं, मैं इसका उदाहरण भी देता हूं। हरियाणा में खाप पंचायतों द्वारा औरतों की जो दुर्दशा है, अब वह कितनी बदली है, वहां का लिंगानुपात कितना बदला है, क्योंकि हरियाणा की बच्चियों ने सारे देश का नाम रोशन किया है …(व्यवधान) खेलों ने हरियाणा के ऊपर कितना अच्छा प्रभाव डाला है।

इसके अलावा पंजाब के बारे में कहना चाहता हूं कि पंजाब के नौजवान नशे से मर रहे हैं। …(व्यवधान) पंजाब के गांवों के ईवेंट मैनेजमैंट के लिए हर शहर, कस्बे में स्पोर्ट्स की फैसिलिटी देनी चाहिए, ताकि वहां के बच्चे स्पोर्ट्स में देश का नाम रोशन कर सकें ।

श्री जय प्रकाश नारायण यादव (बाँका): उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे राष्ट्रीय खेलकूद विश्वविद्यालय विधेयक, 2018 पर बोलने की अनुमति दी, इसके लिए मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। मणिपुर राज्य में राष्ट्रीय खेलकूद विश्वविद्यालय का निर्माण हो, यह विधेयक सदन में आया है। मैं इसका दिल से स्वागत करता हूं और ओलम्पिक पदक विजेता डा.राज्यवर्धन सिंह जी, जो खेल मंत्री भी हैं, उनको बधाई देता हूं। खेल की दुनिया

में भारत ने एक से एक ऊंचे मापदंड कायम करने का काम किया है और हमारा सिर हमेशा ऊंचा रहा है। जो मणिपुर में विश्वविद्यालय खोला जाएगा। इसका असर देश भर में होगा और दुनिया भर में हमारी प्रतिभाओं का नाम ऊंचा होगा। आज फिजिकल एजुकेशन, कोचिंग सैंटर, खेल विज्ञान के प्रबंधन को बेहतर बनाना है। हमारे देश की बहनों, बेटियों और महिलाओं ने खेल की दुनिया में ओलम्पिक पदक तक जीतने का काम किया है। हम एक नहीं अनेकों ध्यानचंद पैदा करेंगे और हमारा राष्ट्र खेल की दुनिया में आगे बढ़ेगा और गौरवांवित होगा।

महोदय, बिहार में खेल की बड़ी संभावनाएं चारों तरफ छिपी हुई हैं। बिहार में मोइनुल हक स्टेडियम है, इसको बेहतर बनाने का काम हो। मैं बांका संसदीय क्षेत्र से आता हूं, यह आदिवासी इलाका है। मैं आपसे यही आग्रह करता हूं कि उस इलाके में, आदिवासी भाइयों में खेल की बहुत संभावनाएं हैं। बांका में शहीद महेन्द्र गोप मंदार स्टेडियम का निर्माण कराया जाए। मुंगेर में दानवीर कर्ण स्टेडियम का निर्माण कराया जाए ।

जमुई में स्वर्गीय सुक्करदास यादव वर्ल्ड स्टेडियम बनाया जाए । भागलपुर में विक्रमशिला स्टेडियम का निर्माण कराया जाए । इसके साथ-साथ जो हमारी महिलाएं हैं, उनको खेल की और सुविधाएं दी जाएं । सभी पंचायतों में, प्रखण्डों में स्टेडियम बनें और खेल की भावना को आगे बढ़ाएं । हम यही आग्रह कर के अपनी बात को समाप्त करते हैं।

श्री दुष्यंत चौटाला (हिसार): उपाध्यक्ष महोदय, दो मिनट के अंदर तो मैं शायद मंत्री जी का धन्यवाद भी नहीं कर पाऊंगा । मैं चाहता हूँ मुझे कम से कम पांच मिनट का समय दीजिए । इस देश की सबसे बड़ी पंचायत का मैं सबसे युवा सांसद हूँ ।

महोदय, मैं माननीय खेल मंत्री जी का स्वागत करता हूँ कि वे स्पोर्ट्स मिनस्टिर होने के नाते ऐसा अहम बिल इस सदन में लाए, जिससे इस देश के अंदर पहली बार स्पोर्ट्स के लिए हम एक यूनिवर्सिटी बनाने जा रहे हैं। इससे पहले पटियाला के अंदर एनआईएस है और ग्वालियर के अंदर नैशनल इंस्टिट्यूट फॉर फिज़िकल एजुकेशन है।

महोदय, जहां हम इस यूनिवर्सिटी की बात करते हैं, अनुराग जी ने शुरू किया और बड़े अच्छे तरीके से बताया कि दुनिया भर के अंदर, चाहे हम अमरीका की बात करें या इंग्लैण्ड की बात करें और आज के दिन अगर मॉडल के तौर पर किसी को देखा जाए तो जरूर ही चाइना से हमें सीखने को बहुत कुछ मिलता है। वहां पर प्रोविंसवाइज़ स्पोर्ट्स के लिए यूनिवर्सिटीज़ बनी हुई हैं, एक्सिलेंस सैंटर्स बने हुए हैं। हमारी केंद्र सरकार मणिपुर के

अंदर कदम उठा रही है, उसका हम स्वागत करते हैं। मगर आज एक बात देखने वाली है कि इस देश के अंदर अगर सबसे ज्यादा टैलेंट कहीं से आया है, पिछले तीन ओलंपिक्स के अंदर, तो उसमें हरियाणा का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है। सन् 2008 में बॉक्सिंग का पहला इकलौता इंडिविजुअल मैडल यदि किसी ने लाने का काम किया तो वह हरियाणा के विजेन्द्र जी ने लाने का काम किया । अगर सन् 2012 में रैसलिंग में किसी ने देश का नाम गौरवान्वित करने का काम किया है तो वह योगेश्वर जी ने करने का काम किया है। जब रियो के अंदर देश अटकलें लगाए बैठा था कि शायद खाता खुलेगा कि नहीं खुलेगा, तब हरियाणा की बेटी साक्षी ने मैडल जीत कर देश को गौरवान्वित करने का काम किया है और गोल्डकोस्ट के अंदर, जहां 66 मैडल आए, उन 66 के अंदर भी अगर सबसे बड़ा योगदान था, तो 22 मैडल हरियाणा की धरती ने इस देश को ला कर देने का काम किया था । मैं यह उम्मीद जरूर रखूंगा कि मंत्री जी रिप्लाई दें तो देश के अंदर हरियाणा के खिलाड़ियों को विश्वास जरूर दिलाएं कि आने वाले समय में इस मदर यूनिवर्सिटी के जब हम बच्चे बनाने का काम करेंगे, अलग-अलग एक्सिलेंस सैंटर्स बनाने का काम करेंगे तो उसके अंदर हरियाणा को जरूर उसका एफिशिएंट शेयर मिलेगा । चाहे हॉकी लें, चाहे बॉक्सिंग लें, चाहे रैसलिंग लें, आज ऐसा कोई खेल नहीं है, जहां हरियाणा के खिलाड़ियों ने इस देश को गौरवान्वित करने का काम न किया हो ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज देश में व्यायामशालाएं खोली जा रही हैं। मैं स्वागत करता हूँ कि सरकार की सोच है कि योग को बढ़ाया जाए । हम जब खेलों की बात करते हैं तो खेल मंत्री जी खुद ओलंपियन रहे हैं, शरीर सुधार के लिए योग कामयाब है, मगर आज चाहे वह फिज़ियोथैरिपी हो, चाहे स्पोर्ट्स साइंस हो, उनके डेवल्पमेंट के लिए भी हमें एक्सिलेंस सैंटर बनाने पड़ेंगे । अगर आप कदम उठाना चाहते हैं तो हमें एचआरडी मिनिस्टर के साथ मिल कर एक कदम उठाना पड़ेगा कि स्पोर्ट्स एजुकेशन, जो फिजिकल एजुकेशन पहले सरकारी स्कूलों में चलती थी, जो खेल के पीरियड्स होते थे, आज वे मैंडेट्री करने पड़ेंगे कि पांचवी-छठी के बच्चों को भी खेल के मैदान में हम दिन में दो घंटे उतारने का काम करें, तब जा कर हमें आने वाले भविष्य में इन यूनिवर्सिटीज़ में डिग्रीज़ प्राप्त करने के लिए हमें बच्चों की लाइन मिलेगी ।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक ऑब्ज़रवेशन जरूर देना चाहूंगा कि जब हम मणिपुर की बात करते हैं, अगर आज कोई फॉरन कोच हम उस यूनिवर्सिटी के अंदर हैल्प करने के लिए लाएंगे तो वह दिल्ली में लैण्ड होगा और दिल्ली से मणिपुर जाने के लिए उसे कम से कम एक दिन का समय लगेगा। …(व्यवधान) सरकार को इस पर विचार करना पड़ेगा कि पांच घंटे में कौन सी ट्रेन वहां पहुंचती है।

आज हम हरियाणा की बात करते हैं। चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने वर्ष 2000 में खेलों को बढ़ावा देने के लिए एक पॉलिसी इस देश में लाने का काम किया था । वह पॉलिसी थी "मेडल लाओ-ईनाम पाओ"। उस समय कर्णम मल्लेश्वरी को दिल्ली के अंदर लैंड होते ही एक फ्लैट और 25 लाख रुपये की राशि देने का काम किया था । आज तो देश के अंदर 6-6 करोड़ रुपये तक का ईनाम दिया जाता है। जो बेसिक लैवल पर इंटर-यूनिवर्सिटी इंटरनेशनल टूर्नामेंट्स में बच्चे जीतकर आते हैं, जो बच्चे वर्ल्ड चैम्पियनशिप में जीतकर आते हैं, उनके मान-सम्मान के लिए भी सरकार जरूर कोई पॉलिसी बनाने का काम करे। अन्त में, मैं दो पंक्तियाँ कहकर अपना भाषण समाप्त करूँगा । हरियाणा पर एक कहावत है:-

"देशन में देश हरयाणा,
जित दूध-दही का खाणा,
खेलों में फर्स्ट आणा,
बॉर्डर पर जाकर सिर कटवाणा,
ऐसा है मेरा हरियाणा ।।"

मंत्री जी, आप हमारे पड़ोसी राज्य के हैं, आप हरियाणा पर जरूर विचार कीजिए । आने वाले समय में आप इस यूनिवर्सिटी का जो पहला रीजनल सेंटर खोलेंगे, आप आज यह इस सदन के अंदर जरूर कहकर जाइए कि उसे हरियाणा की धरती पर खोलने का काम करेंगे । आपका बहुत-बहुत धन्यवाद ।

SHRI VINCENT H. PALA (SHILLONG): Hon. Deputy Speaker, Sir, I thank you for giving me this opportunity.

First of all, I join all my colleagues in congratulating the hon. Minister for bringing this Bill. I think, the hon. Minister himself is one of the finest sportspersons in the world and understands sports better than any one of us.

Sir, I have got only two or three suggestions. Meghalaya is going to host the National Games in 2022 when it will be completing 50 years of Statehood. I would request the hon. Minister to come and visit the facilities. The Government of India has invested more than Rs. 100 crore in NEHU, North-Eastern Hill

University, but I personally visited that place and found it in a shambles. This place can be utilised for the university in Manipur. So, I would request the hon. Minister to come and see the place.

Secondly, if, at all, we want to introduce sports in India, first of all, the mindset of the parents has to be changed. How can we change their mindset? We have to tell the parents that sports is no more about games only; sports is also a business and sports is also used as a means to connect for peaceful purposes. We may also tell them that if Imran Khan can become the Prime Minister of Pakistan, sports can also help their children become leaders of the society.

In addition, CSR fund should also be allowed to be used in sports so that most of the clubs can use it for promoting sports.

Thank you.

श्री मनोज तिवारी (उत्तर पूर्व दिल्ली) : महोदय, आपने मुझे राष्ट्रीय खेलकूद विश्वविद्यालय विधेयक, 2018 पर बोलने का समय दिया, इसके लिए आपका धन्यवाद ।

मुझे यह सुनकर बहुत खुशी हुई कि यह बिल आ रहा है। मैं बैचलर ऑफ फिजिकल एजुकेशन, मास्टर ऑफ फिजिकल एजुकेशन का छात्र रहा हूँ। मैं यूनिवर्सिटी की क्रिकेट टीम का कप्तान भी रहा हूँ। मैं ईस्ट जोन का उप-कप्तान भी रहा हूँ। मैंने विश्वविद्यालय के खेलों को बहुत करीब से देखा-समझा और उसकी समस्याओं को भी देखा और समझा है।

मैं हमारे देश के यशस्वी प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने एक ओलम्पिक पदक विजेता को भारत का खेल मंत्री बनाकर देश के सामने प्रस्तुत किया है। हम इस बात के लिए भी प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहते हैं कि पहली बार उन्होंने शुरू किया कि अब खिलाड़ी बनाने के लिए पढ़ाई होगी । इसके लिए मैं राज्यवर्धन राठौर जी को भी बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। अनुराग ठाकुर जी ने आज जिस प्रकार से अपनी बात रखी है, उसमें बहुत सारी चीजें समाहित हो गई हैं। आज इस सदन में जो दो-तीन शब्द कहे गए हैं, उनसे मुझे थोड़ी तकलीफ हुई है। मैं उन शब्दों को सुनकर आहत हुआ हूँ। कांग्रेस के हमारे कुछ मित्रों की तरफ से यह बात आयी कि यह अदृश्य सरकार है, हम शर्मिंदा हैं। वे लोग शर्मिंदा हैं, जिन्होंने 50 साल तक राज किया। वे लोग शर्मिंदा हैं, जिनके कारण यह हुआ। आप हमारे दिल्ली के गाँवों में जाइए, तो लोग

यमुना के किनारे कोई खेलने का स्थान ढूँढ़ते हैं। यहाँ 15-15 साल कांग्रेस का शासन रहा है। इसी दिल्ली में राष्ट्रमंडल घोटाले जैसा पाप हुआ, जिसने खेल और खिलाड़ी दोनों को कलंकित किया । वह सरकार भी यहाँ 15 साल तक रही और वे लोग कहते हैं कि हम शर्मिंदा हैं। मैं अपने खेल मंत्री जी का धन्यवाद करता हूँ, जब मैं इनके पास दिल्ली के यमुना पार में एक स्टेडियम के लिए गया तो इन्होंने कहा कि आप मुझे जमीन बताओ, मैं जल्दी से आपको स्टेडियम देता हूँ।

लेकिन जब हम लोग जमीन की खोज करना शुरू करते हैं तो पता चलता है कि जिन जमीनों पर खेल के मैदान बनने चाहिए थे, वहां अवैध विदेशी घुसपैठिए अपनी झुग्गी-झोपड़ी डालकर रहने लगे हैं और इससे पहले जो पन्द्रह सालों से सरकार थी, उसने इसके लिए कुछ नहीं किया। अभी जो साढ़े तीन सालों से सरकार है, वह इस पर आंखें मूंद कर खड़ी है। इसका धन्यवाद कि यह मुद्दा आज उठा है।

महोदय, मैं उस गांव का रहने वाला हूं, जहां हम लोग ईंटों से पीट-पीट कर खेतों में ग्राउण्ड को बराबर करके खेल खेलते थे । आज जो उस तरफ बैठे हैं, कल इस तरफ बैठते थे, उनके कारण यह हाल हुआ है। आप राँची से 350 किलोमीटर का क्षेत्र घूम जाएंगे तो अब जाकर वहां स्टेडियम बनने की बात हो रही है। उन क्षेत्रों में लोगों के लिए इससे पहले खेलने का मैदान नहीं रखा गया । हमारे यहां से धोनी जैसे खिलाड़ी भी निकले, लेकिन इन लोगों को दिल्ली आकर खेलना पड़ता था ।

उपाध्यक्ष महोदय, मुझे पहली बार प्रसन्नता हो रही है। मैं बहुत प्रसन्न हूं। बहुत देर से अपनी सीट पर बैठ कर मैं अपनी बारी का इंतजार कर रहा था । मैं अपने खेल मंत्री जी को कुछ सुझाव देना चाहता हूं। खेलों में जो नियुक्तियां हो रही हैं, उनमें ऐसे लोगों की नियुक्ति हो, जो खेल और खिलाड़ियों का दर्द समझते हैं। मैं धन्यवाद देता हूं कि कोचेज की फीस को पहली बार वर्तमान मोदी सरकार के खेल मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौर जी ने बढ़ाया और सारे देश में आज इसकी जय-जयकार हो रही है।

उस तरफ से एक बात आई । हमारे एक बहुत सम्माननीय साथी ने कहा कि हम रोटी और आलू-गोभी खाकर खेले । मैं तो कहता हूं कि अगर हमें रोटी और आलू-गोभी भी अच्छे से मिल गयी होती तो हमारा देश कई क्षेत्रों में बहुत रिकॉर्ड्स बनाकर रख देता । कर्नल राज्यवर्धन राठौर जी, जो हमारे खेल मंत्री हैं, मैं उन्हें धन्यवाद देता हूं कि पहली बार इन्होंने खिलाड़ियों की डाइट को बढ़ा दिया । कल जब मैं किरोड़ीमल कॉलेज के बच्चों से मिला तो लोगों ने हमें धन्यवाद दिया कि आपकी सरकार ने हिमा दास को इतना बढ़िया

बनाया, असम सरकार ने उसे 50 लाख रुपये दिए, आप खिलाड़ियों के लिए सब कुछ कर रहे हैं, हम इस खेल मंत्री से और इस बिल से बहुत खुश हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं इसलिए धन्यवाद करता हूं कि मैं स्वयं मास्टर-ऑफ-फिजीकल एजुकेशन हूं और जब हम स्पोर्ट्स मेडिसिन की बात करते हैं तो हमारे पास ऐसे लोग होने चाहिए जो स्पोर्ट्स मेडिसिन में अच्छे अंक लाए हैं। इस नाते, इसकी जो शुरुआत हो रही है, उसके लिए मैं हमारे खेल मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौर जी को और नरेन्द्र मोदी जी को धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने खेल के स्तर पर पहली बार राष्ट्रीय स्तर पर मणिपुर को एक भारी सौगात दी है। इससे पूरा पर्यटन भी जुड़ेगा और राष्ट्रीय एकता भी कायम होगी ।

मैं इस बिल का समर्थन करता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद ।

SHRI THANGSO BAITE (OUTER MANIPUR): Mr. Deputy-Speaker, Sir, thank you. I rise in support of the National Sports University Bill. In fact, we have been waiting for the fulfilment of the promise of the present Government for opening one National Sports University in Manipur for many years. As it has come true, we are very happy and I really appreciate on behalf of the people of Manipur and on my behalf the Government for awarding this University to a small State like Manipur. This is a first of its kind also. So, we are very happy that Manipur has been given this University. We express our gratitude to the Government. Since I am given very limited time, I am not able to express what I feel.

A number of institutions of Central Government in Manipur is not working properly. I am expecting that this Sports University in Manipur will be one of the most leading universities in India.

Thank you.

श्री सत्यपाल सिंह (सम्भल): उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूं। आज देश के युवाओं के लिए मोदी सरकार ने एक ऐतिहासिक कदम उठाया है। आपने मुझे इस बिल पर बोलने का अवसर दिया, इसलिए मैं आपके प्रति धन्यवाद अर्पित करता हूं। हमारे देश के यशस्वी प्रधान मंत्री माननीय मोदी जी ने जो युवाओं के लिए सोचा है। आज तक

किसी भी सरकार ने इसके लिए विचार नहीं किया था । मणिपुर में राष्ट्रीय खेलकूद विश्वविद्यालय स्थापित किया गया है। अभी हमारे कई वक्ताओं ने बोला कि अभी इसे शुरू किया जाएगा, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि विश्वविद्यालय स्थापित हो चुका है और शुरू भी हो गया है। हम लोगों ने मणिपुर जाकर उसका दौरा भी किया था ।

सर्वप्रथम, मैं अपने माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रति आभार व्यक्त करता हूं तथा उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाले खेल मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौर (सेवानिवृत्त) का भी आभार व्यक्त करता हूं और इस विधेयक का समर्थन करता हूँ।

उपाध्यक्ष महोदय, मुझे सिर्फ एक मिनट और अपनी बात के लिए दीजिए । मैं इतना जरूर कहना चाहूंगा कि आज हमारे देश के जो खिलाड़ी खेलों में पिछड़ जाते हैं और चीन के खिलाड़ी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मेडल लाते हैं, उस स्तर तक अपने देश के खिलाड़ियों को पहुंचने के लिए यह एक सुनहरा अवसर है। मैं माननीय मंत्री जी से एक और निवेदन करना चाहूंगा कि हमारा उत्तर प्रदेश बहुत बड़ा राज्य है, वहां खेलों की बहुत संभावनाएं हैं, इसलिए वहां भी इस खेलकूद विश्वविद्यालय की एक-दो ब्रांच यथाशीघ्र खोलने की कृपा करें । इससे ग्रामीण क्षेत्रों के किसानों एवं गरीबों के बच्चे जो दूर नहीं जा सकते हैं,खेलों के प्रति रूचि लेकर आगे बढ़ सकते हैं ।

श्री वीरेन्द्र सिंह (भदोही): उपाध्यक्ष महोदय, इस संसद में खेल पर अक्सर चर्चा होती रहती हैं, लेकिन आज एक दूसरी चर्चा हो रही है। खेल के संबंध में विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए जो विधेयक आया है, उसका मैं समर्थन करता हूं। अभी बहुत विस्तार से चर्चा हो गई है, लेकिन मैं बहुत कम समय में ही अपनी बात पूरी करूंगा ।

महोदय, इस विश्वविद्यालय की स्थापना भारत में खेलों के विस्तार के लिए हो रही है। खिलाड़ी कहां मिलते हैं, इस संबंध में काफी वक्ताओं ने अपनी बातें रखी हैं। वस्तुत: खेल समाज से जुड़ा हुए एक सिस्टम है। इससे देश का सम्मान तब बढ़ता है, जब ओलंपिक में कोई खिलाड़ी पदक प्राप्त करता है। ओलंपिक में कोई खिलाड़ी कैसे पदक प्राप्त करे, उसका चयन कैसे हो, इस बात का सुझाव कई लोगों ने दिया है। हिन्दुस्तान गाँवों का देश है। गांव में रहने वाले लोग आमतौर पर खेलों से जुड़े होते हैं। हमारे देश में कुछ ऐसी जातियां हैं, जिनके जीन में ही खेल होता है - जैसे नट जाति है, जिमनास्टिक उनके जीन में होता है। उसी प्रकार से तैराकी के बारे में निषाद-मल्लाह हैं, उनके जीन में तैराकी का गुण होता है। मैं खुद कुश्ती का खिलाड़ी रहा हूं, इसलिए मैं इसे अच्छी तरह से जानता हूं। यहां मनोज जी बैठे हुए हैं, उनके गांव के बगल में एक 'हिन्द केशरी' होते थे, उनका नाम मंगला राय था । वे बनारस में पंडा जी के अखाड़े में कुश्ती का अभ्यास करते

थे । वहां हमारे गुंगई पहलवान, चिकन गुरू, अवधेश पहलवान तथा व्यास पहलवान होते थे । ये सारे लोग बनारस के पहलवान थे, जो हमेशा कुश्ती का अभ्यास करते थे ।

महोदय, मैं प्रधानमंत्री जी को इस बात के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने खेलों के बारे में सोचा है। आप लोगों को भी इसे देखने के लिए काशी जाना चाहिए । काशी तथा कुश्ती एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। आप वहां जा कर देखिए, हमारे प्रधान मंत्री जी ने वहां के पुराने व्यायामशालाओं को किस तरह से निर्मित किया है। सभी सांसदों को उससे प्रेरणा मिलेगी । मैंने खुद भी अपने संसदीय क्षेत्र में उस तरह के व्यायामशाला का निर्माण कराया है। माननीय प्रधान मंत्री जी ने 134 व्यायामशालाओं का निर्माण कराया है, जो कुश्ती से संबंधित हैं। मैं समझता हूं कि सभी लोग काशी जाते होंगे, वे उन व्यायामशालाओं को देख सकते हैं। पंडा जी का अखाड़ा ऐतिहासिक अखाड़ा है। मनोज जी का गांव मंगला राय जी के गांव के बगल में है। मैं खेल मंत्री जी से कहना चाहूंगा कि आप मंगला राय जी जैसे पहलवान के गांव में एक व्यायामशाला का निर्माण उनके नाम पर करा देते, तो बड़ी कृपा होती। इसके लिए मेरा आपसे व्यक्तिगत भी निवेदन है, क्योंकि वे 'हिन्द केशरी' थे ।

महोदय जी, मैं आपसे एक दूसरी बात के लिए निवेदन करना चाहूंगा कि हमारे गांव में रहने वाले किसान स्वाभाविक तौर पर घुड़सवारी करते हैं। उनको वहां प्रशिक्षण देना चाहिए । घुड़सवारी की तलाश अगर हम कनॉट प्लेस में करने लगेंगे, तो वह नहीं होगा । अगर हम जिमनास्ट की तलाश चांदनी चौक में करने लगेंगे, तो यह नहीं होगा । मैं चांदनी चौक या कनॉट प्लेस का विरोधी नहीं हूं।

मैं एक बात कह कर अपनी बात समाप्त करूंगा ।हमारे खेल के विकास के लिए जो प्रचार हो रहे हैं, इस पर भी चिंता करने की जरूरत है। आम तौर पर लोग गांव में जानते हैं, देश में जानते हैं कि क्रिकेट का जो खिलाड़ी होता है, उसको ब्रह्मा अपने हाथ से सृजन करते हैं। …(व्यवधान) हमारी बात पूरी हो जाने दीजिए । गांव का जो खिलाड़ी होता है, वह कुश्ती का खिलाड़ी होगा, हॉकी का खिलाड़ी होगा, जिमनास्टिक का खिलाड़ी होगा, तैराक होगा, उसको ब्रह्मा के कारिन्दे बनाते हैं। मैं कुश्ती का खिलाड़ी हूं। मैंने इन चीजों को देखा है। …(व्यवधान) मैं क्रिकेट का विरोधी नहीं हूं। हमारे अनुराग जी चले जाएं, तो लोग जानेंगे कि ये बहुत बड़े खिलाड़ी हैं। वीरेन्द्र सिंह हिन्दुस्तान का कई वर्ष चैम्पियन रहा, तो वह पहलवान है, कम बुद्धि वाला होगा।…(व्यवधान) कुश्ती में जो आदमी से खेलता है, वह कम बुद्धि वाला कैसे होगा और जो बैट, बट्टे से खेलता है, वह कैसे ज्यादा बुद्धि वाला हो जाएगा? मैं यह कहना चाहता हूं कि खेल केवल स्वास्थ्य बढ़ाने के लिए, देश

का सम्मान बढ़ाने के लिए नहीं है। इससे सामाजिक समरसता भी बढ़ती है, सामाजिक एकता भी बढ़ती है और सामाजिक सशक्तिकरण भी होता है। कुश्ती का खिलाड़ी कोई नहीं जानता कि किस जाति का है। कोई कि सी जाति का होता है, कभी ऊपर होता है, कभी नीचे होता है। कभी नहीं पूछता कि तुम मण्डल कमीशन वाले हो, मेरे नीचे वाले हो या ऊपर वाले हो। सामाजिक समरसता का एक बहुत बड़ा आधार कुश्ती है। ग्रामीण खेल का विकास करने के लिए गांव में उसकी तलाश की जानी चाहिए । मैं आपसे निवेदन करूंगा कि गांव में जितने विद्यालय हैं, वहां विश्वविद्यालय का केन्द्र बन सकता है। हमारे यहां बड़े-बड़े विद्यालय हैं।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

HON. DEPUTY SPEAKER: Now, we have to take up Private Members' Business.

… (*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: I cannot help it. I cannot accommodate all of you because at 3.30 pm we have to take up Private Members' Business. Therefore, if the House agrees, then I can allow the Minister to reply and pass the Bill. At the time of the third reading, I will allow some Members and some points can be raised at that time.

… (*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: I will allow you at that time.

… (*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: Now, the hon. Minister.

… (*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: I will call you during the third reading.

… (*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: If the House agrees, then we can extend the time till the Bill is passed.

… (*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: During the third reading I will call all the Members, and you can mention the points that you want to say.

… (*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: Mr. Minister, please be very brief.

युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय के राज्य मंत्री तथा सूचना और प्रसारण मंत्रालय में राज्य मंत्री {कर्नल राज्यवर्धन राठौर (सेवानिवृत्त)}: महोदय, आज खेलों पर चर्चा हुई है। बहुत से सांसदों ने इस चर्चा में भाग लिया है और अच्छी बात यह थी कि जिन सांसदों ने इस चर्चा में भाग लिया, वे सभी इस सदन के युवा सांसद थे । इस सदन में जितने भी सदस्य हैं, हम सब बचपन में जब बड़े हो रहे थे, खेल रहे थे तो अक्सर इस बात को सुनते थे कि 'जो खेलेगा कूदेगा, वह बनेगा खराब'। आज भारत के नौजवानों की शक्ति से, जिस तरह से उनका प्रभाव है, जिस तरह से विश्व में भारतीय युवाओं ने दबदबा किया है और जिस तरह से आज कॉरपोरेट सैक्टर और सारा जगत इन नए आइकॉन्स को और ऊपर चढ़ा रहा है, उससे आज यह परिभाषा बदल गई है। आज जो खेलेगा-कूदेगा, तो वह बनेगा लाजवाब। इससे व्यक्तित्व का विकास होता है और एक व्यक्ति का निर्माण होता है। प्रधान मंत्री मोदी जी ने जब कहा कि जो खेलेगा- 'वह खेलेगा'। वह अपने आपमें एक सम्पूर्ण बात थी कि हर व्यक्ति, चाहे एक्सीलेंस हो या ग्रास रूट लैवल का हो, हर व्यक्ति जो खेलों से जुड़ा होता है, उसका व्यक्तित्व अलग होता है। उसका व्यक्तित्व निखरकर आता है। उसके जीवन में उसका व्यक्ति निर्माण बेहतर होता है।

आज हम यहाँ पर एक विधेयक नेशनल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी बिल को लेकर आए हैं। खेलों से कोचेज जुड़े हुए हैं, स्पोर्ट्स मैनेजमेंट कंपनीज जुड़ी हुई हैं। इक्विप्मेंट मैन्युफैक्चरिंग कंपनीज हैं, स्टेडियम्स हैं, चाहे पब्लिक हों या प्राइवेट हों, खिलाड़ी खुद उससे जुड़े हुए हैं। स्पोर्ट्स साइंस के लोग खेलों से जुड़े हुए हैं। अपने आपमें स्पोर्ट्स का जो पूरा एन्वायर्नमेंट है, वर्ष 2019 तक 80 बिलियन डॉलर की यह इंडस्ट्री पूरे विश्व के अंदर होगी । आर्थिक रूप से भी, व्यक्ति निर्माण से और एक्सीलेंस से हमें इस धारा में जुड़ना है।

हर चीज जहां विकास होता है, प्रगति होती है, वहीं शिक्षा जरूरी जुड़ी होती है। Knowledge is required. सिर्फ जोश से काम नहीं चलता, होश होना जरूरी है। नॉलेज होना जरूरी है। इतने सालों के बाद भी हमारी देश में इस तरह की की यूनिवर्सिटी नहीं है

जो अपने आप में बिकॉन ऑफ नॉलेज हो, इस तरह का इंस्टीट्यूशन जो पूरे देश का मार्ग मार्गदर्शन खेल और खेल से जुड़ा हर सेक्टर को कर सकता है। आज हम इस बिल को लेकर आए हैं। इसमें प्रस्ताव है कि नेशनल स्पोटर्स यूनिवर्सिटी को मणिपुर में स्थापित करें । ऐसा नहीं है कि पूरे देश में कोई कॉलेज और यूनिवर्सिटीज नहीं है। अगर यूनिवर्सिटी या डीम्ड यूनिवर्सिटी फिजिकल एजुकेशन के ऊपर ही फोकस्ड है। लेकिन स्पोटर्स का जो पूरा दायरा उसमें शामिल नहीं है। यह स्पोर्ट यूनिवर्सिटी स्पोटर्स के पूरे स्पेक्ट्रम को एड्रेस करेगी । इसमें बैचलर्स डिग्री और मास्टर डिग्री रिसर्च में भी मिलेगी, ट्रेनिंग में मिलेगी, इलिट एथिलीट की तैयारी के लिए होगी, स्पोटर्स ऑफिसियल का होगा, रेफरी का होगा, इम्पायर्स का होगा, इसमें जुड़े हुए सभी लोगों की ट्रेनिंग इसमें शामिल होगी ।

मैं सदन को बताना चाहता हूं कि इस स्पोटर्स यूनिवर्सिटी में जितने भी कोर्सेज होंगे वे सारे मणिपुर में चलाए जाएंगे, इसके अलावा यह भी प्रावधान है कि मदर यूनिवर्सिटी के आऊटलाइन्स कैम्पस दूसरे स्टेट में भी हो सकते हैं, बल्कि विदेशों में भी हो सकते हैं। हम अपनी सोच को सीमित क्यों रखें? हमारी यूनिवर्सिटी सिर्फ देश में ही शिक्षा दे, हम अपनी यूनिवर्सिटी को ऐसे स्तर पर ले जाएं, नॉलेज गेन करने के लिए अभी हमने यूनिवर्सिटी ऑफ कैनबरा से एमओयू किया, यूनिवर्सिटी ऑफ विक्टोरिया से एमओयू किया है, जो कैरिकुलम है, जिस तरह के स्पोटर्स के लिए लेबोरेटरीज होने चाहिए, वह वे नॉलेज हासिल करेंगे । यह एमओयू सिर्फ कागज पर नहीं है यह भी निश्चित किया गया है कि फैकल्टी मणिपुर में आकर रहे ताकि कैरिकुल को नियंत्रित रखे । हम अपने यूनिवर्सिटी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ले जाएं । आज हमारे देश के युवा स्पोरटर्स मैनेजमेंट करना चाहते हैं या स्पोटर्स से जुड़ा हुआ कोर्स करना चाहते हैं। आज यूके जाते हैं, आस्ट्रेलिया जाते हैं, क्यों नहीं भारत में ऐसी यूनिवर्सिटी हो, हम इस बात को रख रहे हैं।

मैं सभी सदस्यों का धन्यवाद करना चाहता हूं कि उन्होंने नेशनल स्पोटर्स यूनिवर्सिटी बिल का समर्थन किया है। मैं इस यूनिवर्सिटी की तीन विशेषता बताता हूं, सबसे पहले इसका चांसलर खिलाड़ी होगा, ताकि वह खेल की स्प्रिट को आगे बढ़ा सके। इसके अंदर एकेडमिक काउन्सिल होंगे उसके अंदर भी खिलाड़ी होंगे, जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल चुके हैं और वे यूनिवर्सिटी का मागदर्शन करेंगे । इसमें लगातार फंडिंग की जरूरत पड़ेगी क्योंकि विजन बड़ा है। इसमें केन्द्र सरकार का लगातार कॉपोरेशन रहेगा । एक बात जरूर आई, प्रेमचन्द्रन जी ने कही कि बाकी सब तो ठीक है, लेकिन उन्होंने कहा कि ऑर्डिनेंस लेकर क्यों आए? मैं सदन को बताना चाहता हूं कि इसमें कोई विलंब नहीं था । हमने लोक सभा में बिल इंट्रोड्यूस किया। मैं एक बहुत महत्वपूर्ण बात बता रहा हूं। हमारे ऊपर आरोप लगाया गया …(व्यवधान)

SHRI ASADUDDIN OWAISI (HYDERABAD): Sir, you can take it on Monday. What about the Private Members' Bill?

HON. DEPUTY SPEAKER: Already the House has accepted that this debate can continue.

… (*Interruptions*)

SHRI ASADUDDIN OWAISI: It is completely wrong and it is unfair. … (*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: I will extend the time after 6 p.m. We will extend the time to the Private Members' Bill.

… (*Interruptions*)

SHRI ASADUDDIN OWAISI: Sir, it is my time. It is the time of the Private Members' Bill. … (*Interruptions*)

कर्नल राज्यवर्धन राठौर (सेवानिवृत्त) : उपाध्यक्ष महोदय, खेलों के साथ ऐसा अक्सर हुआ है जब खेलों की बात हो रही है तो उसमें राजनीति लेकर आ जाते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए ।

SHRI ASADUDDIN OWAISI: You should read the rules instead of passing the remarks. Let him read the rules. … (*Interruptions*)

कर्नल राज्यवर्धन राठौर (सेवानिवृत्त) : उपाध्यक्ष महोदय, मेरे ऊपर यह आरोप लगाया गया कि हम सही समय पर बिल लेकर नहीं आए, अध्यादेश लेकर आए। मैं इस बात को सदन में स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूं। हमने इस बिल को सदन में दस अगस्त को रखा, ग्यारह अगस्त को सदन साइने डाइ हो गया । 24 अगस्त को हमने इसे स्टैन्डिंग कमेटी को दे दिया । स्टैन्डिंग कमेटी ने अक्तूबर से लेकर जनवरी तक पांच मीटिंग्स की ।

उन्होंने अच्छी मीटिंग्स की और वह मणिपुर भी जाकर आए । मीटिंग्स करने के बाद स्टैंडिंग कमेटी ने 5 जनवरी को लोकसभा और राज्य सभा में रिपोर्ट सब्मिट की, तब हमें विश्वास हुआ कि अब यह बिल पास हो जाएगा। स्टूडेंट्स का नुकसान न हो, इसके लिए हमने कोर्स शुरु कर दिए । 15 जनवरी से कोर्स शुरु हो गए ।

हम इस बिल को बजट सैशन में लेकर आए । सदन जानता है कि बजट सैशन पूरा वाशआउट हो गया । बजट सैशन को चलने नहीं दिया गया। अब एक तरफ स्टूडेंट्स का नुकसान होने वाला था, उनको कैसे डिग्री मिलती जब इस यूनिवर्सिटी को कोई रिकोग्निशन ही नहीं दिया गया। उनको हानि न पहुंचे, स्टूडेंट्स को नुकसान न पहुंचे इसलिए हम अध्यादेश लेकर आए ताकि खिलाड़ी बचे रहें।

मैं प्रेमचन्द्रन जी और सबसे कहना चाहता हूं-

शोर शराबा करके तुम कानून बनाने न देते,
अध्यादेश अगर लाएं तो तुम लाने भी न देते ।
फिर बतलाओ अंधकार में दीपक कहां जलेगा जी,
ऐसे ही तुम अड़े रहे तो देश कहां चलेगा जी ।

माननीय उपाध्यक्ष जी, हमारा संकल्प और इरादे बुलंद हैं।

हम टूट नहीं सकते, हम झुक नहीं सकते,
अगर देश की बात है तो हम रुक भी नहीं सकते ।

यही कारण है कि हम अध्यादेश लेकर आए ।

माननीय उपाध्यक्ष जी, अनुराग जी ने अपनी बात रखी। वह पुराने खिलाड़ी रहे हैं, अभी भी खिलाड़ी हैं और वह एक एडमिनिस्ट्रेटर भी रहे हैं। इसके अलावा अन्य माननीय सदस्यों ने पैशन के साथ अपनी बात रखी । मुझे यह बात ऑन रिकॉर्ड कहने में कोई शंका नहीं है कि मन से हर सांसद, हर देशवासी चाहता है कि खेल और हमारे खिलाड़ी आगे बढ़ें । आज जरूरत है कि मेरे और तुम्हारे पाले को देखे बगैर साथ काम करें । आज इसकी जरूरत है। यहीं से राजनीति शुरु होती है कि मेरा पाला इतना है और तुम्हारा पाला इतना है।

मैं सदन और पूरे देश का ध्यान दिलाना चाहता हूं कि खेल एक स्टेट सब्जैक्ट है। खेलों का डेवलपमेंट, खेलों पर जो कानून बनते हैं, सारे कानून और सारा डेवलपमेंट राज्य सरकार के हाथ में है। इसके बाद फेडरेशन्स आती हैं, जो अपने आपको सोसाइटी कहते हैं और सोसाइटी इंडीपेंडेंट होती है। उनका सीधा कनेक्शन अंतर्राष्ट्रीय फेडरेशन के साथ होता है और अंतर्राष्ट्रीय फेडरेशन का कनेक्शन इंटरनेशनल ओलम्पिक कमेटी के

साथ होता है। पहले वाली सरकार ने कोशिश की थी, एक स्पोर्ट्स कोड लेकर भी आए थे और खिलाड़ियों ने पूरी तरह से इसका समर्थन किया था। हर खिलाड़ी चाहता है कि इस तरह का कानून बने ताकि फेडरेशन्स को किसी तरह से बांधा जा सके ताकि वे सही दिशा में काम करें ।

राज्य सरकार पर अपने आप में जिम्मेदारी बहुत बड़ी है। मैं आज एक बात कहता हूं, हमने सभी मुख्यमंत्रियों को याद दिलाते हुए चिट्ठी लिखी कि आप अपने राज्य में 2011 का स्पोर्ट्स कोड इम्पलीमेंट कीजिए । हम केंद्र से नेशनल स्पोर्ट्स फेडरेशन पर जारी कर सकते हैं लेकिन स्टेट में नहीं कर सकते हैं। ग्रास रूट पर कौन कनैक्टिड है? राष्ट्रीय फैडरेशन्स नहीं स्टेट्स फेडरेशन्स कनेक्टिड हैं, तो क्यों नहीं स्टेट्स में डिस्ट्रिक्ट चैम्पियनशिप्स होती हैं? स्टेट्स क्यों नहीं कोशिश करती ताकि स्टेट्स का सीएसआर सही तरह इस्तेमाल हो सके और प्राइवेट या प्राइवेट-पब्लिक एकेडमीज़ को और प्रोत्साहन मिले? हर राज्य यूथ डेवलपमेंट की बात कहता है। यूथ डेवलपमेंट में सीधी एक ही बात है, आप हर राज्य का बजट उठाकर देख लीजिए । यहां सबने केंद्र के बजट की बात कही, यह तो स्टेट की जिम्मेदारी है। आप स्टेट का बजट एक बार उठाकर तो देखिए कि स्टेट में कितना बजट है।

एजुकेशन डिपार्टमेंट, स्पोर्ट्स डिपार्टमेंट एक साथ बात नहीं करता है। स्टेट स्पोर्ट्स और एजुकेशन डिपार्टमेंट कोऑर्डिनेट करे और राज्य में जो फेडरेशन्स हैं, उनके साथ भी कोऑर्डिनेट करे। यह करना बहुत जरूरी है। जूनियर और वूमेन प्लेयर्स को प्रोत्साहन मिलना चाहिए । स्पोर्ट्स अथारिटी आफ इंडिया और मिनिस्ट्री आफ स्पोर्ट्स फेडरेशन्स से बात करती है। अब हमने कुछ नए प्रयोग किए हैं।

अभी मैं उसके बारे जिक्र करूंगा । अनुराग जी ने जब अपनी बात रखी, तो उसके अंदर यूनिवर्सिटीज की बात रखी कि यूनिवर्सिटीज़ में स्पोर्ट्स आगे क्यों नहीं बढ़ रहा । हमने एक बदलाव किया । मौलाना अब्दुल कलाम आजाद ट्रॉफी अभी तक उस व्यक्ति, उस यूनिवर्सिटी को दी जाती थी, जो अपने यहां सबसे ज्यादा इवेन्ट्स करते थे। हमने इसमें बदलाव किया । हमने कहा कि सिर्फ इवेन्ट ऑर्गेनाइज करने से नहीं होता है, आपकी यूनिवर्सिटी में खिलाड़ी कैसे हैं, कितने ऊंचे लैवल के खिलाड़ी हैं- ओलम्पिक्स, एशियन गेम्स या कॉमनवेल्थ गेम्स के खिलाड़ी हैं, उस हिसाब से नम्बर मिलेंगे और उसी हिसाब ट्रॉफी भी दी जाएगी । उसी तरह इंटरनेशनल ट्रेनिंग की बात है। इंटरनेशनल ट्रेनिंग के ऊपर पैसा खर्च होता है। ओवरऑल ट्रेनिंग की जिम्मेदारी केंद्र सरकार की है। ओवरऑल ट्रेनिंग के अंदर जितने भी खिलाड़ी भारत की टीम में आते हैं, चाहे वे सीनियर

हों या जूनियर हों और जो पोटेंशियल खिलाड़ी होते हैं, उनकी ट्रेनिंग का ध्यान केंद्र सरकार रखती है। महाडीक जी ने खिलाड़ियों की अच्छी डाइट एवं उन्हें मिलने वाले एक हजार रुपये स्टाइपेंड के बारे में बात की है। मैं आपको बतलाना चाहूंगा कि कुछ वर्ष पहले यह साल में 850 रुपये होती थी । मैं आपको तीन चीजों के बारे में बताना चाहता हूं - पहला स्टाइपेंड, दूसरा फूड के ऊपर पैसा और तीसरा सप्लीमेंट के ऊपर पैसा । यानी खिलाड़ियों को जो फूड प्रतिदिन मिलता है, हमने उसे बढ़ाकर 690 रुपये प्रतिदिन कर दिया है। उसी खिलाड़ी को खाना अलग मिलता है, सप्लीमेंट अलग मिलता है। खिलाड़ी का सप्लीमेंट 750 रुपये प्रतिदिन कर दिया है। इस प्रकार एक खिलाड़ी को एक महीने के अंदर 690 रुपये और 750 रुपये प्रतिदिन दिए जाते हैं। खिलाड़ी को स्टाइपेंड दो हजार रुपये प्रतिमाह मिलती है और ये एवरेज खिलाड़ी के लिए है, जो ट्रेनी एकेडमी में ट्रेनिंग कर रहे हैं, जैसा अनुराग जी ने कहा कि खिलाड़ी विदेश जा कर भी ट्रेनिंग लेते हैं। जहां अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों के साथ कम्पीटिशन होता है, तो अपने खिलाड़ियों को ट्रेनिंग के लिए बाहर भी भेजते हैं। उन खिलाड़ियों को केवल खाना और ट्रेनिंग ही नहीं, हमने पचास हजार रुपये प्रति माह 200 खिलाड़ियों को देना शुरू किये हैं। उसका कोई बिल नहीं लिया जाता है, वह उनका पॉकेट एलाउंस है। पहली बार है कि प्रधान मंत्री जी ने ओलम्पिक टॉस्क फोर्स लगाई है। ओलम्पिक टॉस्क फोर्स लगाने के बाद जो रिकमेंडेशंस आईं, उन्हें हमने स्वीकार किया है। कुछ समय पहले मनोज जी ने बात कही थी कि पहली बार भारत में हो रहा है कि भारत के जो कोचेज होते थे, उनकी तनख्वाह क्यों एक लाख रुपये तक रोक कर रखी थी । नेशनल एकेडमीज के जो कोच हैं, हमने उनकी सौ प्रतिशत तनख्वाह बढ़ाई है और दो लाख रुपये की है। एक मैश्यर है उसके लिए बीस हजार रुपये रखा था । बीस हजार रुपये में वह क्या नॉलेज हासिल करेगा और क्या अपना घर चलाएगा । जितने भी हमारे पास स्पोर्ट्स साइड के हैं, हमने सौ प्रतिशत उनकी तनख्वाह बढ़ाई है। इसी तरह पहली बार प्राइवेट एकेडमीज के साथ हमने पार्टनरशिप की है। नेशनल स्पोर्ट्स डेवलपमेंट फंड के बारे में सदन को बताना जरूरी है कि अभी तक जितने भी खिलाड़ी हैं, जितने भी खिलाड़ियों ने ओलम्पिक पदक जीता है, वे सभी इस फंड से फंडिंग पाकर जाते हैं। इस फंड में सभी भारतीय पैसा दे सकते हैं और यह भी बता सकते हैं कि मेरा पैसा कहां खर्च होगा । इस तरह से नेशनल स्पोर्ट्स डेवलपमेंट फंड का काम हो रहा है। वेयर टू प्ले, हाउ टू प्ले की एप्लीकेशन तैयार हो रही है। मैंने नेचुरल टैलेंट की बात भी कही है। देश में दस साल के बच्चों का टैलेंट देख रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं सदन में इस विषय पर कम से कम दो-तीन घंटे तसल्ली से बात कर सकता हूं, लेकिन समय कम है और आप चाहते हैं कि मैं अपनी बात समाप्त

करूं । मैं एक बात कहना चाहता हूं कि प्रेमचन्द्रन जी ने यह बात रखी कि क्लाज़ 7(2), जिसके अंदर केंद्र सरकार इंस्पेक्ट कर सकती है और इन्क्वायर कर सकती है, माननीय प्रेमचंद जी यह वैसा-का-वैसा सेन्ट्रल यूनिवर्सिटीज एक्ट से लिया है। सेन्ट्रल यूनिवर्सिटीज एक्ट 8(3) में यही बात है जो हमने 7(2) में ली है। उसी तरह से आपने क्लाज़ 25 (4), जिसके अंदर केंद्र सरकार नई स्टैच्यूट्स बना सकती है। वहां पर भी हमने उसी तरह से किया है जैसे देश के अंदर बाकी यूनिवर्सिटीज़ हैं। सेन्ट्रल यूनिवर्सिटीज एक्ट 25(5) एवं 27(5) हू-ब-हू वही क्लाज़ हमने 25(4) में लिया है।

नेशनल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी में हम वही कानून पारित करना चाहते हैं, जो बाकी सारी यूनिवर्सिटीज में है, इसमें कोई नई बात नहीं है।…(व्यवधान)

SHRI M. B. RAJESH (PALAKKAD): Sir, he has not said anything about the demand for regional campus in Kerala.

कर्नल राज्यवर्धन राठौर (सेवानिवृत्त): केरल के बारे में आपने जो बात कही है, मैं बताना चाहूंगा कि फिजिकल एजुकेशन के जो सबसे पहले दो कॉलेज बने, पूरे देश में ऐसे दो ही कॉलेज हैं, उनमें से एक केरल में है। …(व्यवधान) इसी तरह से इसके जो नए आउटलाइंग कैम्पसेस बनेंगे, सभी राज्य सरकारों से बात करके, जो भी इसमें हमें सबसे ज्यादा समर्थन करेगा, वहां हम आउटलाइंग कैम्पसेस खोल सकते हैं।…(व्यवधान) मैं सदन से विधेयक पारित करने का अनुरोध करता हूं।…(व्यवधान)

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri N.K. Premachandran, are you moving your Resolution?

SHRI N.K. PREMACHANDRAN (KOLLAM): Sir, I do not want to take the time of the Private Members' Business. So, I would be very brief.

Whenever there is pandemonium in the House, it is the responsibility of the Government to resolve the deadlock. It is not the fault of the Opposition. It is the responsibility of the Leader of the House and the Government to see that the pandemonium is being resolved.

Since it is a matter of sports and he has already assured so many things and the regional campus that we have demanded for Kerala has also been

assured, I seek the permission of the House to withdraw my Resolution.

The Resolution was, by leave, withdrawn.

HON. DEPUTY SPEAKER: The question is:

> "That the Bill to establish and incorporate a National Sports University in the State of Manipur, a specialised University first of its kind, to promote sports education in the area of sports sciences, sports technology, sports management and sports coaching, besides functioning as the national training centre for select sports disciplines by adopting best international practices and for matters connected therewith or incidental thereto, be taken into consideration."

The motion was adopted.

HON. DEPUTY SPEAKER: The House will now take up clause-by-clause.

Clause 2 Definitions

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri N.K. Premachandran, are you moving amendment Nos. 2 to 5 to Clause 2?

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : I beg to move:

"Page 1, line 9, --
for "by the Ordinances"
substitute "under this Act"." (2)

"Page 2, line 5, --
after "maintained by,"
insert "or managed by"." (3)

"Page 2, *for* line 6, --
substitute '(f)' "Core council" means Core council of the University'." (4)

"Page 2, lines 18 and 19, --
after "maintained by"
insert "or managed by"." (5)

HON. DEPUTY SPEAKER: I shall now put amendment Nos. 2 to 5 to clause 2, moved by Shri N.K. Premachandran to the vote of the House.

The amendments were put and negatived.

HON. DEPUTY SPEAKER: The question is:

"That clause 2 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 2 was added to the Bill.

Clause 3 Establishment of University

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri N.K. Premachandran, are you moving amendment No. 6 to clause 3?

SHRI N.K. PREMACHANDRAN: I beg to move:

"Page 3, line 11, --

for "Court"

substitute "Core council"." (6)

HON. DEPUTY SPEAKER: I shall now put amendment No. 6 to clause 3, moved by Shri N.K. Premachandran to the vote of the House.

The amendment was put and negatived.

HON. DEPUTY SPEAKER: The question is:

"That clause 3 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 3 was added to the Bill.

Clause 4 Objects of University

HON. DEPUTY SPEAKER: Amendment No. 7 – Prof. Saugata Roy is not present.

The question is:

"That clause 4 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 4 was added to the Bill.

Clause 5 Powers and functions of University

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri N.K. Premachandran, are you moving amendment Nos. 8 to 10 to clause 5?

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : I beg to move:

"Page 5, line 30, --
after "welfare of the"
insert "students and"." (8)

"Page 6, line 2, --
for "in the interest"
substitute "for the benefit"." (9)

"Page 6, line 20, --
after "or Institution"
insert "outside India"." (10)

HON. DEPUTY SPEAKER: I shall now put amendment Nos. 8 to 10 to clause 5, moved by Shri N.K. Premachandran to the vote of the House

The amendments were put and negatived.

HON. DEPUTY SPEAKER: The question is:

"That clause 5 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 5 was added to the Bill.

Clause 6 was added to the Bill.

Clause 7 Central University to review work and progress of University

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri N.K. Premachandran, are you moving amendment Nos. 11 to 26 to clause 7?

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : I beg to move:

"Page 7, lines 17 and 18, --
omit "including Outlying Campuses, Colleges, Institutions, Regional Centres and Study Centres maintained by it"." (11)

"Page 7, line 21, --
for "issue such directions"
substitute "make such recommendations"."
(12)

"Page 7, lines 22 and 23, --
for "abide for such action and be bound to comply with such directions"

substitute "consider such recommendations"." (13)

"Page 7, line 25, --
omit ", its buildings, sport complexes"." (14)

"Page 7, *omit* lines 26 to 30." (15)

"Page 7, line 32, --
omit "or inquiry"." (16)

"Page 7, line 36, --
omit "or inquiry"." (17)

"Page 7, line 38, --
omit "or inquiry"." (18)

"Page 7, line 40, --
omit "or inquiry"." (19)

"Page 7, line 41, --
omit "or inquiry"." (20)

Page 7, lines 42 and 43, --
omit "or any Outlying Campus or College or Institution or Regional Centre or Study Centre established or maintained by it"." (21)

"Page 7, line 44, --
omit "or inquiry"." (22)

"Page 7, line 51, --
omit "or inquiry"." (23)

"Page 8, lines 1 and 2, --
omit "to the satisfaction of the Central Government"." (24)

"Page 8, *omit* lines 5 to 7." (25)

"Page 8, line 8, --
for "order"
substitute "direction"." (26)

HON. DEPUTY SPEAKER: I shall now put amendment Nos. 11 to 26 to clause 7, moved by Shri N.K. Premachandran to the vote of the House.

The amendments were put and negatived.

HON. DEPUTY SPEAKER: The question is:

"That clause 7 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 7 was added to the Bill.

Clause 8 was added to the Bill.

Clause 9 Chancellor

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri N.K. Premachandran, are you moving amendment No. 27 to clause 9?

SHRI N.K. PREMACHANDRAN: No, Sir.

HON. DEPUTY SPEAKER: The question is:

"That clause 9 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 9 was added to the Bill.

Clause 10 Vice-Chancellor

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri N.K. Premachandran, are you moving amendment No. 28 to clause 10?

SHRI N.K. PREMACHANDRAN: Sir, I am not moving my amendment.

HON. DEPUTY SPEAKER: The question is:

"That clause 10 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 10 was added to the Bill.

Caluses 11 to 16 were added to the Bill.

Clause 17 Authorities of University

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri N.K. Premachandran, are you moving amendment No. 29 to clause 17?

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : I am not moving the amendment.

HON. DEPUTY SPEAKER: The question is:

"That clause 17 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 17 was added to the Bill.

Clause 18 The Court

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri N.K. Premachandran, are you moving amendment No. 30 to clause 18?

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : No, Sir.

HON. DEPUTY SPEAKER: The question is:

"Clause 18 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 18 was added to the Bill.

Clauses 19 to 25 were added to the Bill.

Clause 26 Powers to make ordinances

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri N.K. Premachandran, are you moving amendment No.31 to clause 26?

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : No, Sir, I am not moving.

HON. DEPUTY SPEAKER: The question is:

"That clause 26 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 26 was added to the Bill.

Clause 27 was added to the Bill.

Clause 28 Annual Report

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri N.K. Premachandran, are you moving amendment No.32 to clause 28?

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : No, Sir, I am not moving.

HON. DEPUTY SPEAKER: The question is:

"That clause 28 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 28 was added to the Bill.

Clause 29 Annual Accounts

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri N.K. Premachandran, are you moving amendment No.33 to clause 29?

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : No, Sir, I am not moving.

HON. DEPUTY SPEAKER: The question is:

"That clause 29 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 29 was added to the Bill.

Clauses 30 to 38 were added to the Bill.

Clause 39 Protection of action taken in good faith

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri N.K. Premachandran, are you moving amendment No.34 to clause 39?

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : No, Sir, I am not moving.

HON. DEPUTY SPEAKER: The question is:

"That clause 39 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 39 was added to the Bill.

Clauses 40 and 41 were added to the Bill.

Clause 42 Statutes, ordinances and regulations to be published in the official Gazette and to be laid before the Parliament

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri N.K. Premachandran, are you moving amendment Nos.35, 36 and 37 to clause 42?

SHRI N.K. PREMACHANDRAN: No, Sir, I am not moving.

HON. DEPUTY SPEAKER: The question is:

"That clause 42 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 42 was added to the Bill.

Clause 43 Transitional Provisions

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri N.K. Premachandran, are you moving amendment No.38 to clause 43?

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : No, Sir, I am not moving.

HON. DEPUTY SPEAKER: The question is:

"That clause 43 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 43 was added to the Bill.

Clause 44 was added to the Bill.

The Schedule was added to the Bill.

Clause 1 and the Enacting Formula were added to the Bill.

Title

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri N.K. Premachandran, are you moving amendment No.1 to the Long Title?

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : I beg to move:

Page 1, in the long title,-

a*fter* "promote sports education"

insert "and research" (1)

HON. DEPUTY SPEAKER: I shall now put amendment No.1, moved by Shri N.K. Premachandran, to the Long Title, to the vote of the House.

The amendment was put and negatived.

HON. DEPUTY SPEAKER: The question is"

"That the Long Title stand part of the Bill."

The motion was adopted.

The Long Title was added to the Bill.

COL. RAJYAVARDHAN RATHORE (RETD.): I beg to Move:

"That the Bill be passed."

HON. DEPUTY SPEAKER: The question is:

"That the Bill be passed."

The motion was adopted.

HON. DEPUTY SPEAKER: Now, the House shall take up Private Members' Introduction of Bills. Some Members have requested to be called early as they have some urgency.